मौलिक कर्तव्य संविधान में गैर–प्रवर्तनीय होने के बावजूद महत्त्वपूर्ण

डॉ. कपिल खरे
भूतपूर्व अतिथि विद्वान
राजनीति विज्ञान विभाग, शा महा बिछुआ (म प्र), भारत

सामान्यतः कर्तव्य शब्द का अभिप्राय उन कार्यों से माना जाता है, जिन्हें करने के लिए व्यक्ति नैतिक रूप से प्रतिबद्ध होता है। कर्तव्य शब्द से वह बोध होता है कि व्यक्ति किसी कार्य को अपनी इच्छा, अनिच्छा या केवल बाह्य दबाव के कारण नहीं करता है अपितु आंतरिक नैतिक प्रेरणा के कारण ही करता है। अतः कर्तव्य के पार्श्व में सिद्धांत या उद्देश्य की प्रेरणा है। जिस प्रकार संतान और माता–पिता का परस्पर संबंध, पति–पत्नी का संबध, सत्यभाषण, अस्तेय (चोरी न करना) आदि के पीछे एक सूक्ष्म नैतिक बंधन मात्र है। कर्तव्य शब्द में **"कर्म"** और **"दान"** इन दो भावनाओं का सम्मिश्रण है। इस पर निरूस्वार्थता की अस्फुट छाप पूर्णतः नजर आती है। कर्तव्य मानव के किसी कार्य को करने या न करने के उत्तरदायित्व के लिए दूसरा शब्द है। कर्तव्य दो प्रकार के होते हैं– नैतिक तथा कानूनी। नैतिक कर्तव्य वे हैं जिनका संबंध मानवता की नैतिक भावना, अंतरूकरण की प्रेरणा या उचित कार्य की प्रवृत्ति से होता है। इस श्रेणी के कर्तव्यों का सरंक्षण राज्य द्वारा नहीं होता। यदि मानव इन कर्तव्यों का पालन नहीं करता तो उसका अंतरूकरण उसको धिक्कार सकता है, या समाज उसकी निंदा कर सकता है किंतु राज्य उन्हें इन कर्तव्यों के पालन के लिए बाध्य नहीं कर सकता। सत्यभाषण, संतान संरक्षण, सद्व्यवहार, ये नैतिक कर्तव्य के उदाहरण हैं। कानूनी कर्तव्य वे हैं जिनका पालन न करने पर नागरिक राज्य द्वारा निर्धारित दंड का भागी हो जाता है। इन कर्तव्यों का अध्ययन राजनीतिक शास्त्र में होता है।

कैटलिन के शब्दों में –***"नागरिकता किसी व्यक्ति की वह वैधानिक स्थिति है जिसके कारण वह राजनीतिक रूप से संगठित समाज की सदस्यता प्राप्त कर विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक अधिकार प्राप्त करता है।"*** जब व्यक्ति को नागरिकता प्राप्त हो जाती है तो उसके बेहतर निर्वहन के लिये मौलिक अधिकारों की आवश्यकता होती है वहीं राज्य की व्यवस्था को सुचारु रूप से संचालित करने के लिये राज्य नागरिकों से मौलिक कर्तव्यों के निर्वहन की भी अपेक्षा करता है।

अधिकार और कर्तव्य का बड़ा घनिष्ठ संबंध है। वस्तुतः अधिकार और कर्तव्य एक ही पदार्थ के दो पार्श्व हैं। जब हम कहते हैं कि अमुक व्यक्ति का अमुक वस्तु पर अधिकार है, तो इसका दूसरा अर्थ यह भी होता है कि अन्य व्यक्तियों का कर्तव्य है कि उस वस्तु पर अपना अधिकार न समझकर उस पर उस व्यक्ति का ही अधिकार समझें। अतः कर्तव्य और अधिकार सहगामी हैं। जब हम यह समझते हैं कि समाज और राज्य में रहकर हमारे कुछ अधिकार बन जाते हैं तो हमें यह भी समझना चाहिए कि समाज और राज्य में रहते हुए हमारे कुछ कर्तव्य भी हैं। अनिवार्य अधिकारों का अनिवार्य कर्तव्यों से घनिष्ठ संबंध है। दुनिया भर के कई देशों ने **'जिम्मेदार नागरिकता'** के सिद्धांतों को मूर्त रूप देकर स्वयं को विकसित अर्थव्यवस्थाओं में बदलने का कार्य किया है।

इस संबंध में संयुक्त राज्य अमेरिका को सबसे उत्कृष्ट उदाहरण माना जा सकता है। अमेरिका द्वारा अपने नागरिकों को **'सिटिजन्स अल्मनाक'** नाम से एक दस्तावेज जारी किया जाता है जिसमें सभी नागरिकों के कर्तव्यों का विवरण दिया होता है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) (E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138)

International Peer Reviewed, Open Access Journal
E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138 | Impact factor: 5.75 | ESTD Year: 2014
UGC and ISSN Approved and added in the UGC Approved List of Journals .

E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

This work is subjected to be copyright. All rights are reserved whether the whole or part of the material is concerned, specifically the rights of translation, reprinting, re-use of illusions, recitation, broadcasting, reproduction on microfilms or in any other way, and storage in data banks. Duplication of this publication of parts thereof is permitted only under the provision of the copyright law, in its current version, and permission of use must always be obtained from IJRAR www.ijrar.org Publishers.

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) is published under the Name of IJRAR publication and URL: www.ijrar.org.

E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

©IJRAR Journal

Published in India

Typesetting: Camera-ready by author, data conversation by IJRAR Publishing Services – IJRAR Journal.

IJRAR Journal, WWW.IJRAR.ORG

E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) (IJRAR) is published in online form over Internet. This journal is published at the Website http://www.ijrar.org, maintained by IJRAR Gujarat, India.

WWW.IJRAR.ORG
UGC and ISSN Approved, 5.75 Impact Factor

editor@ijrar.org
UGC and ISSN Approved

An International Open Access Journal
UGC and ISSN Approved | E-ISSN 2348-1269,
P- ISSN 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS

IJRAR.ORG

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR)

International Peer Reviewed, Open Access Journal

E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138 | Impact factor: 5.75 | ESTD Year: 2014

UGC and ISSN Approved and added in the UGC Approved List of Journals .

Website: www.ijrar.org

International Journal of Research and Analytical Reviews

IJRAR

Website: www.ijrar.org

IJRAR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN : 2277-7881; IMPACT FACTOR – 5.818; IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
VOLUME 7, ISSUE 2(3), FEBRUARY 2018

भारतीय संसद में विपक्ष की भूमिका – आलोचनात्मक मूल्यांकन

डॉ. कपिल खरे
अतिथि विद्वान (राजनीति विज्ञान)
शासकीय महाविद्यालय बिछुआ (म0प्र0)

सारांश :–

किसी भी देश में स्वतन्त्रता एवं लोकतंत्र जीवित है या नहीं यदि यह मालूम करना है तो यह जानना जरुरी है कि वहां विपक्ष है नहीं,और यदि है तो उसकी संसद में भूमिका क्या है ?कैसी है?किसी भी लोकतंत्र की प्रतिनिधि संस्था में विपक्ष एवं उसके नेता की भूमिका स्पष्ट होनी चाहिए लोकतंत्र की सफलता में सत्ता पक्ष की जितनी भूमिका है उतनी ही विपक्ष की भी है कोई भी फैसला जनता का फैसला तभी कहला सकेगा जब सरकार एवं विपक्ष सहयोग करें और साथ ही अपनी जिम्मेदारी क परिचय भी दें। विपक्ष उन्हें कहा जाता है जिन्हें अपने पक्ष में बहुमत प्राप्त नहीं होते किन्तु अपनी प्रजातान्त्रिक मूल्यों के विपरीत आचरण करने पर विरोध करने के लिए वह कटिबद्ध है।

शोध प्रविधि :– इस शोध पत्र में भारतीय संसद में विपक्ष की भूमिका – आलोचनात्मक मूल्यांकन में द्वितीय शोध सामाग्री के द्वारा अध्ययन किया गया हैं। जिसमें विद्वानों का मार्गदर्शन एवं सुझाव भी समाहित है। इसके साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं को भी अध्ययन का आधार बनाया गया है।

उद्देश्य :–

पिछले एक दशक से भारतीय संसद में जैसा आचरण विपक्ष का देखने में आ रहा है उससे यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि विरोध प्रदर्शन करने का एकमात्र तरीका असंसदीय कार्यवाही तथा संसद की कार्यवाही को नहीं होने देना ही माना जाने लगा है । पूर्व में भी संसद की कार्यवाही को रोका जाता था या बाधित किया जाता था लेकिन ऐसा सिर्फ तभी किया जाता था जब विपक्ष को यह प्रतीत होता था कि उसकी बात को सुना नहीं जा रहा है या महत्त्व नहीं दिया जा रहा हैं। पीठासीन अधिकारी के आसन के सामने इकट्ठा होकर

12. Organic Food-Healthy Returns to Tradition 130
Khushboo Ahuja

13. Self-Confidence in Integrating ICT Education Among Teacher Educators B.Ed Colleges 147
Patan Mastan Vali

14. Indian Government Move Towards Tougher Consumer Protection Law: A Brief Study 162
Cherukuri Sreenivasa Rao and Koneru Anuradha

15. भारतीय संसद में विपक्ष की भूमिका – आलोचनात्मक मूल्यांकन 172
कपिल खरे

16. पर्व–त्योहार संबंधी नागपुरी लोकगीत 177
रामजय नाईक

17. Effectiveness of Micro Finance in Sustainable Rural Development –A Study in Dhemaji District 183
Mridu Pavan Chintey

18. Child Labour of Assam:-A Case Study of Dhemaji Town in Assam 192
Dandiram Pegu

19. Artificial Intelligence and Laws in India: An Analytical Appraisal 203
Vikrant Sopan Yadav

20. **స్త్రీల కథలు - దేశభక్తి** 215
ఏటూరు జ్యోతి

21. Women's Job Participation In And Efficiency Of Nrega Program – A Case Study 220
Kalyani Racha

22. Indian Economy - Problems of Development and Planning 236
Dr.Varre Prabhakar

23. Problems and Perspectives of Caste System in India – A Study 247
Kaka Ravi

CONTENTS

Volume 7 Issue 2(3) February 2018

S. No		Pg. No
1.	A Study on HRM Practices in Select Hospitals in Guntur District **B.Suneel Kumar and D.A.R.Subrahmanyam**	1
2.	Dalit Women in Dr. Ambedkar's Social Movements **Ch. Madhusudhana Rao**	14
3.	Gymnema Sylvestre of Phytochemical Study and Pharmacological Activities: A Review **Siva Rami Reddy.E**	24
4.	Electronic Media Broadcast in Telugu Language **Ramanujapuram Sucharitha**	38
5.	**पञ्चतन्त्रग्रन्थरत्ने आतिथ्यभावना** **नरेन्द्र आर्यः**	51
6.	The Potential Significance of Condominium Houses for the Ever Growing Urban Population of Southern Nations Nationalities and Peoples Regions (SNNPR): Ethiopia **T. T. Anteneh and E.A. Narayana**	58
7.	The First Interim Ministry of Orissa (Odisha): A Study (1st April 1937-13 July 1937) **Sudarsan Pradhan**	83
8.	**सुबोधिन्यनुसारं प्रायाश्चित्तेन पापापूर्वाणां ध्वंसप्रतिपादकत्वनिरूपणम्** **विघ्नेश्वरभट्टः**	87
9.	Kāma – Misconception in Indian Society **Santosh More**	92
10.	Perceived Performance Appraisal and Job Satisfaction: Supervisors vs Subordinates, Ethiopian Revenue and Custom Authority (ERCA) **Wako Geda Obse and T.Subbarayudu**	100
11.	The Clash of Civilizations; A Critique **Mohammad Imran**	117

Volume 7, Issue 2(3), February 2018

International Journal of Multidisciplinary Educational Research

Published by
Sucharitha Publications
48-12-3/7, Flat No: 302, Alekya Residency
Srinagar, Visakhapatnam – 530 016
Andhra Pradesh – India
Email: victorphilosophy@gmail.com
Website: www.ijmer.in

ISSN: 2277-7881
IJMER, VOLUME 7, ISSUE 2(3), FEBRUARY 2018
IMPACT FACTOR: 5.818, IC VALUE: 5.16, ISI VALUE :2.286

International Journal of Multidisciplinary Educational Research®

(Humanities, Social Science, Commerce, Management, Engineering, Law, Technology and Sciences)

Art
Social Sciences
Humanities
Commerce
Management
Engineering
Technology
Medicine
Sciences
Development Studies
Religion
Literature

International Journal of Multidisciplinary Educational Research

International Journal of Multidisciplinary Educational Research
ISSN 2277-7881
IJMER
"It Nourishes and Enhances Wisdom - A Boon of Study"

Monthly - International Journal of Multidisciplinary Educational Research

Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory @, ProQuest.U.S.A
International Regd. &
Peer Reviewed

Editor-in-Chief
Dr. Victor Babu Koppula

ISSN : 2394-3580
Swadeshi Research Foundation
A Monthly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED Multidisciplinary Journal Sl.No-108, Journal No-62711) Vol. – 5, No. - 5 March. 2018
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-3.9 Research Journal

लोकतंत्र की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में धर्मनिरपेक्षता

डॉ. कपिल खरे
अतिथि विद्वान, राजनीति विज्ञान, शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ (म.प्र.)

सारांश :– लोकतंत्र एक ऐसी शासन व्यवस्था है जिसमें जनता अपना शासक खुद चुनती है। यह शब्द लोकतांत्रिक व्यवस्था और लोकतांत्रिक राज्य दोनों के लिये प्रयुक्त होता है। यद्यपि लोकतंत्र शब्द का प्रयोग राजनीतिक सन्दर्भ में किया जाता है, किंतु लोकतंत्र का सिद्धांत दूसरे समूहों और संगठनों के लिये भी संगत है। सामान्यतः लोकतंत्र विभिन्न सिद्धांतों के मिश्रण से बनते हैं, पर मतदान को लोकतंत्र के अधिकांश प्रकारों का चरित्रगत लक्षण माना जाता है।

भारतीय संविधान के द्वारा भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है। भारतीय संविधान की पूर्वपीठिका में सेक्युलर शब्द 42 वें संविधान संसोधन द्वारा सन 1976 में जोड़ा गया। किन्तु ऐतिहासिक रूप से भारत में सर्वधर्म समन्वय और वैचारिक एवं दार्शनिक स्वतन्त्रता अनादी काल से चली आ रही है।भारतीय संविधान के प्रस्तावना में घोषणा के अनुसार भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। धर्मनिरपेक्ष शब्द भारतीय संविधान की प्रस्तावना में बयालीसवाँ संशोधन द्वारा डाला गया था। यह सभी धर्मों और धार्मिक सहिष्णुता और सम्मान की समानता का अर्थ है। भारत, इसलिए एक आधिकारिक राज्य धर्म नहीं है। हर व्यक्ति को उपदेश, अभ्यास और किसी भी धर्म में चुनाव प्रचार करने का अधिकार है। सरकार के पक्ष में या किसी भी धर्म के खिलाफ भेदभाव नहीं करना चाहिए. यह बराबर सम्मान के साथ सभी धर्मों का इलाज करना होगा. एस आर बोम्मई बनाम भारतीय संघ में भारत के सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के मूल ढांचे का एक अभिन्न हिस्सा धर्मनिरपेक्षता को माना है।

शोध प्रविधि :– इस शोध पत्र में द्वितीय शोध सामाग्री का संकलन किया गया है। जिसके हेतु पत्र–पत्रिकाओं आदि को शोध पत्र बनाने में अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य :– देश के लोकतंत्र के लिए वहुलतावाद और धर्मनिरपेक्षता बेहद जरूरी गुण हैं।देश का संविधान यह सुनिश्चित करता है कि हर नागरिक इस लोकतांत्रिक ढांचे में तमाम विविधताओं और वहुलताओं के साथ रहे।यही इस लोकतंत्र की मजबूती और खूबसूरती है। आज हमारे सामने देश का आधारभूत स्वरूप, जो पूर्णतरू धर्मनिरपेक्ष है, के मूल्यों पर एक बार फिर से जोर देने की जरूरत है। ये मूल्य हैं– समानता, धर्मनिरपेक्षता और सहिष्णुता। इस विविध और बाहुलता के धनी देश में इन्हीं मूल्यों को आधार बनाकर एक दूसरे के प्रति स्वीकृति बनायी गई है और इन्हीं को नींव बनाकर ये लोकतंत्र अपनी स्थिरता को कायम रखेगा।भारत विविधतापूर्ण संस्कृति का देश है। जिसमें अधिनायकवाद का कोई स्थान नहीं है। जो लोग अधिनायकवाद को भारत में बढ़ावा देना चाहते है वे लोकतंत्र को कमजोर करते है।

समस्याऐं :– भारत की स्वतंत्रता के साथ ही देश में लोकतंत्र आया है सूचना के अधिकार से लोकतंत्र बहुत मजबूत हुआ है इसके प्रयोग से प्रशासन में पारदर्शिता बढ़ायी जा सकती है। किन्तु निहित स्वार्थी लोगों द्वारा की जा रही आर.टी. आई. कार्यकर्ताओं की हत्या लोकतंत्र को कमजोर करेंगी।

सांप्रदायिकता सभी धर्मों में आती है। धर्म मानव मूल्य का नाम है। किन्तु किसी विशेष धर्म की राजनीति सांप्रदायिक होती है।

धर्मनिरपेक्षता का मतलब नास्तिकता नहीं है वरन् राज्य सत्ता धार्मिक आधार पर न चले यह सुनिश्चित करना है। धर्म के मायने नैतिकता होनी चाहिए। भारतीय संविधान सें अच्छा कोई मार्गदर्शक ग्रंथ धर्मनिरपेक्षता को समझाने के लिए नहीं हो सकता है।

भगतसिंह, अम्बेडकर और गांधी भारतीय राष्ट्रवाद के प्रतीक है। समाज में बेहतरी केवल सामाजिक आन्दोलनों के माध्यम से ही आ सकती है तथा सामाजिक आन्दोलन केवल लोकतंत्र में ही संभव है।

भारतीय लोकतंत्र को बांटो और राज करो की नीति लिंग असमानता, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, संप्रदायवाद, जातिवाद तथा अमीर गरीब के बीच बढ़ती खाई आदि से खतरा है। उन्होंने लोकतंत्र की मजबूती के लिए सांप्रदायिक सौहार्द व धार्मिक सहिष्णुता पर बल दिया।

Contents

S.No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	Educational views of Swami Vivekananda in the present context	Prof. G. Vidya Sagar Reddy Dr. G. Vasudevaiah	1-6
2	A study of status of sanitation and sewerage services to urban slum people and its impact on the living conditions after the BSUP program implementation with special reference to Indore city	Dr. (Mrs.) Shree Dwivedi Avinash Bhatheja	7-10
3	Ayurvedic herbalism development prospective views	Vd.Pravin Raghunathrao Joshi Vd.Anita Pravin Joshi (Kulkarni)	11-12
4	In Pursuit of Happiness: Women in Selected Breast Stories of Mahasweta Devi	Niharika Singh	13-16
5	Shades of Gender in Talat Abbasi's Short Stories	Gauri Handa	17-19
6	PIKETTY AND PROGRESS – A REVIEW	Dr. Madhu Satam	20-21
7	मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम की चुनौतियाँ	कु. सांत्वना अग्रवाल	22-24
8	अनुसूचित जाति महिला सशक्तिकरण : एक विश्लेषण (उज्जैन जिले के विशेष सन्दर्भ में)	डॉ. ललिता सोलंकी प्रो. तपन चौरे	25-35
9	भारतीय युवा और भारत	रजनीश बाजपेई	36-38
10	लोकतंत्र की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में धर्मनिरपेक्षता	डॉ. कपिल खरे	39-45
11	भारत में महिलाओं की स्थिति एवं विकास	डॉ. सुमन तिवारी	46-53
12	ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में पंचायतों की आवश्यकता एवं महत्व	श्रुति जैन	54-55
13	बढ़ती जरूरतों से उलझता उपभोक्ता संरक्षण	डॉ. असलम खॉन	56-59
14	मुण्डारी साहित्य में काशीनाथ सिंह मुण्डा 'काण्डे' का योगदान	लखीन्द्र मुण्डा	60-62
15	प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा	कृष्ण कुमार पाण्डेय डॉ. रामरतन साहू	63-65
16	सार्वजनिक वितरण प्रणाली से संबंधित योजनाएं	डॉ. अशोक सोनी निकिता खरे	66-68
17	महिला सुरक्षा संबंधी कानून – एक विवेचना	ज्योति सिंह (राफिया)	69-72
18	Today's Need – Swachh Bharat Abhiyan	Dr. Prabha Soni	73-75

UGC APPROVED

ISSN : 2394-3580 VOLUME - 5 No. : 5 March - 2018

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Research Journal
SRF
Book Publication

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor - 3.9

Published by :
Swadeshi Research Foundation & Publication
Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482002

समान नागरिक संहिता : एक राष्ट्र एक कानून

डॉ0 कपिल खरे*

सारांश : आधुनिककालीन न्याय व्यवस्था में संविधान को सर्वोच्च माना गया है, परन्तु समाज में व्याप्त धार्मिक जातिगत विविधता के आधार पर कुछ विभिन्न कानूनगत विशेषताएँ दृष्टिगोचर भी होती है, जिसके कारण मौर्यकालीन समान नागरिक संहिता का महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है जब समय-समय पर आधुनिक काल में इस प्रकार की जन सामान्य से माँग उठती रहती है। यह दुर्भाग्य का विषय है कि देश के राजनेताओं राजनीतिकदलों सहित अधिकांश लोगों ने समान नागरिक संहिता के विषय पर न तो भारत के संविधान की आत्मा को समझने का प्रयास किया और न ही सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इस विषय पर समय समय पर दिए गए निर्णयों को देखने की कोशिश की। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने समान नागरिक संहिता के विषय पर राष्ट्र का ध्यान आकर्षित करते हुए जो रोशनी दिखाई है,.उसमे सभी पूर्वाग्रहों एवं दुराग्रहों को छोड़ते हुए सद्भावना के साथ चिंतन एवं मनन होना आवश्यक है।

प्रविधि : इस शोध पत्र विषय समान नागरिक संहिता : एक राष्ट्र एक कानून विषय पर द्वितीय शोध सामग्री के द्वारा अध्ययन किया गया है। इसके साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं, विद्वानों का मार्गदर्शन के द्वारा भी अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य : जब ब्रिटिश भारत आये तो उन्होंने पाया कि यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी आदि सभी धर्मो के अलग अलग धर्म सम्बंधित नियम कानून है। अतः उन्होंने इस पर विचार किया कि सभी भारतीय नागरिको के लिए एक ही नागरिक संहिता बनाई जाये पर धर्मो की विविधता और सभी के अपने अपने कानून होने के कारण उन्होंने यह विचार त्याग दिया। सन 1840 में ब्रिटिश सरकार द्वारा लेक्स लूसी रिपोर्ट के आधार पर अपराधों सबूतों और अनुबंधों के लिए एक समान कानून का निर्माण किया गया था,.लेकिन उन्होंने जानबूझकर हिन्दुओं और मुसलमानो के कुछ निजी कानूनों को छोड़ दिया था।

संविधान का निर्माण करते हुए बुद्धिजीवियों ने यह सोचा कि प्रत्येक धर्म के भारतीय नागरिकों के लिए एक ही सिविल कानून रहना चाहिए। इसके अंतर्गत विवाह सम्पत्ति विरासत का उत्तराधिकार दत्तक ग्रहण आते है अर्थात इन सभी विषयों में सभी धर्मो के लिए एक ही कानून लागू होगा। वर्तमान में हर धर्म के लोग इन मामलों का निपटारा अपने अपने पर्सनल लॉ के तहत करते हैं।

समस्या : भारत की आजादी के बाद भी वह कई संकीर्ण मानसिकताओं का गुलाम बना हुआ था। जहाँ एक और हिन्दू पुरुष एकाधिक विवाह कर सकते थे, वही दूसरी ओर एक विधवा महिला पुनर्विवाह का विचार भी मन में नहीं ला सकती थी। महिलाओं को उत्तराधिकार और सम्पत्ति के अधिकार से वंचित रखा गया था महिलाओं के जीवन में इन सामाजिक बेड़ियों को तोडने के लिए नेहरू जी ने हिन्दू कोड बिल का आवाहन किया। डॉ.भीमराव अम्बेडकर भी इस मामले में नेहरू जी के साथ खड़े नजर आये,.परन्तु इस बिल का पुरजोर विरोध किया गया। 1940 के दशक में गठित संविधान सभा ने जहाँ एक ओर समान नागरिक संहिता को अपनाकर समाज में सुधार चाहने वाले डॉ. बी आर अम्बेडकर जैसे लोग थे, वहीं धार्मिक रीति रिवाजो पर आधारित निजी कानूनों को बनाये रखने के पक्षधर मुस्लिम प्रतिनिधि भी थे ,जिसके कारण संविधान सभा में समान नागरिक संहिता का विरोध किया गया। इसके अलावा देश की राजनीतिक विसंगति के कारण किसी सरकार ने इसे लागू करने के लिए उचित इच्छाशक्ति नहीं दिखाई।

इस प्रकार आजादी के पहले हिन्दू नागरिक संहिता बनाने का प्रयास असफल रहा। बाद में संविधान के भीतर 1952 में पहली सरकार गठित होने पर इस दिशा में कार्यवाही प्रारम्भ हुई और विवाह आदि विषयो पर हिन्दूओ के लिए अलग अलग कोड बनाये गए।

समाधान : सर्वप्रथम 1985 में सर्वोच्च न्यायालय की खंडपीठ के तत्कालीन मुख्य न्यायमूर्ति वाय वी चन्द्रचूड़ सहित पांच वरिष्ठ न्यायमूर्तियों ने बहुचर्चित शाहबानो केस में अपराध विधान प्रक्रिया की धारा 125 के अन्तर्गत 500 रूपए प्रतिमाह भरण पोषण देने के लिए समान नागरिक संहिता लागू किये जाने के संवैधानिक कर्तव्य को पूर्ण करने हेतु अपना निर्णय दिया। तत्पश्चात 1985 में ही सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्तिगण चिन्नप रेड्डी एवं आर बी मिश्रा ने निर्णय देते हुए लिखा कि अब समय आ गया है जब देश में समान नागरिक संहिता लागू की जाये। तदुपरान्त सन 1995 में पुनः सर्वोच्च न्यायालय की

*अतिथि विद्वान (राजनीति विज्ञान), शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ (म0प्र0)

अनुक्रमणिका

- 'सिन्धुराजवधम्' महाकाव्य के रचयिता डॉ0 बलभद्रशास्त्री का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व — 1–3
  मोनिका यादव
- ब्रह्माण्ड एवं संस्कृत–विद्वानों व ऋषियों का प्रकृति–प्रेम एक : वैज्ञानिक–दृष्टिकोण — 4–8
  मनोज जोशी
- डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार जातिवाद एवं समाजवाद — 9–14
  डॉ0 गोपाल प्रसाद
- मुस्लिम महिलाएँ : तीन तलाक एवं शिक्षा — 15–18
  हेमलता सिंह
- लघु एवं कुटीर उद्योगों में भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रभाव अनूपपुर जिले के सन्दर्भ में — 19–21
  डॉ0 हीरालाल चौधरी
- समान नागरिक संहिता : एक राष्ट्र एक कानून — 22–24
  डॉ0 कपिल खरे
- बौद्ध एवं जैनधर्म के कर्म विचार में तुलना — 25–27
  डॉ0 कुमारी सरोज व डॉ0 पारसनाथ प्रसाद
- पर्यटन उद्योगों का पर्यावरणीय विकास : एक ऐतिहासिक अध्ययन — 28–30
  डॉ0 मनोरमा सिंह
- राष्ट्रीयता एवं वैश्वीकरण — 31–33
  डॉ0 मिताली मीनू
- प्रवासी हिन्दी साहित्य में कहानी–बोध — 34–37
  डॉ0 रीना अग्निहोत्री
- मैत्रेयी पुष्पा की भाषा में वाक्य संरचना के घटक — 38–43
  डॉ0 रेखा गौतम
- भारतीय धर्माचारी संस्कार : स्वरूप और विकास — 44–46
  डॉ0 शंकर मुनि राय
- गीता का सामाजिक दर्शन एवं मूल्य — 47–48
  प्रो0 सुनील
- संस्कृत–व्याकरण में उदात्तत्वादिवर्णधर्म : एम विमर्श — 49–60
  डॉ0 विक्रम जीत
- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एवं असंलग्न आन्दोलन — 61–64
  डॉ0 विशाल चौबीसा
- धर्मस्वरूपम् — 65–68
  ललित मोहन जोशी
- योग चिकित्सा द्वारा तनाव प्रबंधन — 69–73
  मदन लाल गुजर

ISSN-2349-364X

वेदाञ्जली

अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भित षाण्मासिकी शोध पत्रिका

(International Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-५ अंक-९ भाग-१

जनवरी-जून २०१८

प्रधानसम्पादक

डॉ0 रामकेश्वर तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, श्री बैकुंठनाथ पवहारी संस्कृत महाविद्यालय

बैकुंठपुर, देवरिया

सह सम्पादक

श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशक

वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी

वाराणसी

ISSN 2349-364X

वेदाञ्जली

अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भित षाणमासिकी शोधपत्रिका

(International Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-५ अंक-९, भाग-१ जनवरी-जून, २०१८

प्रधान सम्पादक
डॉ० रामकेश्वर तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, श्री बैकुंठनाथ पवहारी संस्कृत महाविद्यालय
बैकुंठपुर, देवरिया

सह सम्पादक
श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशन : वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

कुछ संसदीय तकनीकी शब्दों की सरल व्याख्या

*डॉ. कपिल खरे

सारांश

भारतीय संविधान के अंतर्गत संसदीय प्रणाली का प्रमुख स्थान है। इसके अंतर्गत राष्ट्रपति एवं दो सदन अर्थात् लोकसभा और राज्यसभा को सामूहिक रूप को संसद के नाम से जाना जाता है। संसदीय साहित्य वैज्ञानिक होने के कारण का मुख्यतः तकनीकी प्रकृति है। अतः इसके कार्यों को पूर्ण करने के लिए सटीक एवं उपयुक्त पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता होती है। अतः शब्दों का चयन करते समय यह प्रयास रहता है कि उसका एक निश्चित स्पष्ट एवं अपेक्षित अर्थ निकाला जा सके। तकनीकी शब्दावली का महत्व इसी में है कि उसका जो अर्थ मूलरूप में निकलता है। उसी के अनुरूप अनुवाद की भाषा में शब्दावली का प्रयोग किया जाए।

किसी कार्यालय के कार्यकरण को सुचारु बनाने के लिए उसकी अपनी भाषा–शैली और शब्दावली का होना बहुत आवश्यक है। एक–दो दशक पहले तक, राज्य सभा सचिवालय अन्य अभिकरणों द्वारा तैयार किए गए शब्दकोशों, शब्दावलियों और शब्द–संग्रहों पर पूर्णतया निर्भर था। समय के साथ इस बात की आवश्यकता महसूस हुई कि सचिवालय में राज्य सभा वाद–विवाद, संसदीय समाचार (भाग 1 और भाग 2), विभिन्न संसदीय समितियों के प्रतिवेदनों, संसदीय प्रश्नों, विधेयकों और अधिनियमों, सारांश इत्यादि के अंग्रेजी पाठ में बहुधा प्रयुक्त होने वाले ऐसे शब्दों और वाक्यांशों के लिए हिंदी शब्द और वाक्यांश होने चाहिए। ऐसे शब्द और वाक्यांश अपने अर्थ और आशय की दृष्टि से तकनीकी और विशिष्ट होते हैं।

उद्देश्य : आम नागरिक के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उसे संसदीय शब्दावली, संसदीय प्रक्रिया एवं नियमों का भी ज्ञान हो। संसदीय व्यवस्था के प्रति उनका नजरिया सकारात्मक और सम्मानजनक हो, उसे संसदीय शब्दावली, संसदीय प्रक्रिया और नियमों का भी ज्ञान होना आवश्यक है। वर्तमान समय में संसद की प्रक्रिया में तकनीकी शब्दावली का प्रयोग किया जाना लाभकारी है परंतु इसकी भाषा शैली आम नागरिकों को भी जानना जरूरी है। अतः इस लेख का उद्देश्य है:

- तकनीकी शब्दावली की विशेषताओं को नागरिकों तक ज्ञान कराना।
- तकनीकी शब्दावली के मूल शब्दों की पहचान से व्यक्ति की जागरूकता को प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- तकनीकी शब्दावली के मूल शब्दों का अध्ययन करना।

समस्या : अमूमन आम नागरिक को भी संसदीय शब्दावली की विशेष जानकारी नहीं होती है। संसदीय शब्दावली में तकनीकी भाषा का प्रयोग किए जाने के कारण इसका महत्व काफी बढ़ जाता है। परंतु आम नागरिक की समझ में यह सरलता से नहीं आती। अतः संसदीय अभिव्यक्तियों को जानना ऐसे में भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए जरूरी हो जाता है। यह एक ऐसी अभिव्यक्ति है जो बहुत महत्वपूर्ण है और सामान्यतः संसदीय कार्यवाहियों में उपयोग की जाती है। प्रत्येक अभिव्यक्ति के साथ इसके अर्थ और तात्पर्य की यथासंभव टिप्पणी को लगाकर समझाया जा सकता है।

---

* अतिथि प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ (म. प्र.)

7.	महिला सशक्तीकरण में आरक्षण की भूमिका एक विवेचना	डॉ. गजनफर आलम	93
8.	समानता हेतु स्त्री–संवेदी बजट	डॉ. संजुला थानवी	98
9.	राजनीति में लैंगिक भेदभाव के कारण	डॉ. अनिता शर्मा एवं डॉ. हरिहरानंद शर्मा	107
10.	भारत में चुनावी रैलियों का नृजातीय अध्ययन	प्रवीण कुमार झा एवं पंकज कुमार झा	113

■ **अंतरराष्ट्रीय राजनीति / विदेश–नीति :–**

1.	समकालीन विश्व में राष्ट्रवाद	डॉ. अभय प्रसाद सिंह	123
2.	भारत–अमेरिका संबंध : 21वीं सदी में उभरते आयाम एवं चुनौतियाँ	गौरव कुमार शर्मा	129
3.	भारत–अमेरिका संबंध : मतभेद के नवीनतम बिंदू	अंकेश कुमार मीणा	136
4.	भारत की पड़ोसी देशों के साथ विदेश–नीति वर्तमान संदर्भ में	डॉ. शांतेष कुमार सिंह एवं राकेश कुमार मीणा	139
5.	नेपाल में माओवादी नेतृत्व का भारत–नेपाल वैदेशिक संबंध	डॉ. नरेंद्र कुमार आर्य	145
6.	आतंकवाद एवं भारत की विदेश नीति	रईस अहमद खान एवं डॉ. आनंद मोहन दविवेदी	153
7.	ईरान का वि:नाभिकीयकरण और मध्य–पूर्व में पाश्चात्य	डॉ. दीप्ति कुमारी	157

■ **पारिभाषिक शब्दावली : –**

1.	राजनीति विज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली	डॉ. ममता चंद्रशेखर	166
2.	कुछ संसदीय तकनीकी शब्दों की सरल व्याख्या	डॉ. कपिल खरे	170

■ **राजनीति विज्ञान के मूलभूत शब्दावली** 176

अनुक्रम

अध्यक्ष की ओर से iii

संपादकीय iv

आलेख शीर्षक	लेखक	
■ भारतीय राजनीतिक विचारधाराएँ :–		
1. आधुनिक राजव्यवस्था : कौटिल्य के विचारों की प्रासंगिकता	डॉ. संजीव कुमार तिवारी	01
2. महर्षि अरविन्दों का राजनीतिक दर्शन	डॉ. संगीता शर्मा	07
3. गांधी दर्शन में मानव अधिकारों की अवधारणा	डॉ. राजेश कुमार शर्मा	14
4. सुभाष चंद्र बोस का राजनीतिक चिंतन	डॉ. इंद्रमणि सिंह	19
5. दादाभाई नौरोजी के सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों का चिंतन	डॉ. दीपक कुमार अवस्थी	26
6. डॉ. राम मनोहर लोहिया के आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता	ब्रजेश कुमार	31
7. भारतीय राजनीतिक चिंतकों की दृष्टि मे संघर्ष–निवारण मे नैतिक शिक्षा और आध्यात्मिकता का महत्व	डॉ. पुष्पलता कुमारी	37
8. वैदेशिक मामले और पं. दीनदयाल उपाध्याय	डॉ. मनीष कुमार तिवारी	43
9. गॉंधी दर्शन में सामाजिक न्याय के विचार	आरती	49
■ भारतीय राजनीतिक व्यवस्था :–		
1. भारतीय संघीय व्यवस्था की असमरूपी विशेषताएं	राजेंद्र कुमार पांडेय	53
2. भारतीय लोकतंत्र में न्यायपालिका की बढ़ती सक्रियता का प्रभाव	डॉ. नियाज अहमद अंसारी एवं डॉ. शाहजाद अहमद अंसारी	59
3. लोकतांत्रिक गणराज्य में चुनावी घोषणा पत्र की राजनीति	सुमन मौर्य	66
4. भारत में भाषा की राजनीति	डॉ. राजीव कुमार सिंह	73
5. लोकतंत्र सामाजिक जनसंचार माध्यम, चुनौती एवं संभावनाएँ	आनंद सौरभ	79
6. इक्कीसवीं सदी में भारत में महिलाओं की स्थिति और नारी सशक्तिकरण के लिए संसदीय प्रयास	डॉ. नावेद जमाल एवं संजीव कुमार सिंह	85

प्रधान संपादक
प्रो. अवनीश कुमार
अध्यक्ष

संपादक
डॉ. शिव कुमार चौधरी
सहायक निदेशक
एवं
डॉ. शाहजाद अहमद अंसारी
सहायक वैज्ञानिक अधिकारी
(राजनीति विज्ञान)

प्रकाशन
श्री शिव कुमार चौधरी
सहायक निदेशक

संपर्क सूत्र
संपादक

"ज्ञान गरिमा सिंधु"
वैज्ञानिक तथा तकनीकी
शब्दावली आयोग
पश्चिमी खंड-7
आर. के. पुरम,
नई दिल्ली-110066

देवदास साकेत
[illegible]
[illegible]
[illegible]

UGC JOURNAL NO-41285

ISSN : 2321-0443

ज्ञान गरिमा सिंधु

(त्रैमासिक पत्रिका)

राजनीति विज्ञान विशेषांक

अंक - 58

(अप्रैल–जून, 2018)

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार
2018

COMMISSION FOR SCIENTIFIC AND TECHNICAL TERMINOLOGY
MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
(DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION)
GOVERNMENT OF INDIA
2018

अप्रैल-जून 2018
ISSN: 2321-0443
UGC Journal No. 41285

ज्ञान गरिमा सिंधु

अंक : 58

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

राजनीति विज्ञान विशेषांक

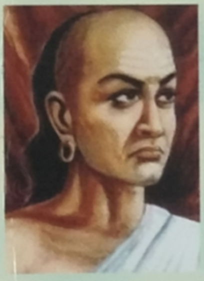

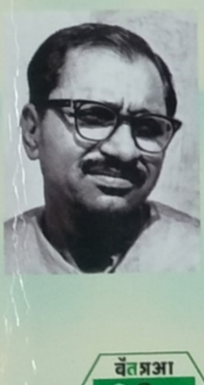

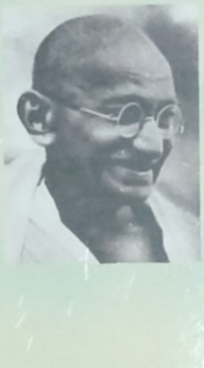

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार
Commission for Scientific and Technical Terminology
Ministry of Human Resource Development
(Department of Higher Education)
Government of India

Volume III, Issue XXI
January to March 2018
U.G.C. Journal No. 64728

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 5.110 (2017)

Naveen Shodh Sansar

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)
(U.G.C. Approved Journal)

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

45. ग्रामीण कृषि विकास में मध्यप्रदेश ग्रामीण आजीविका परियोजना की भूमिका (डॉ. आर. एस. मण्डलोई) 124

46. भारतीय कृषि की वर्तमान चुनौतियाँ एवं समाधान (डॉ. रावेन्द्र सिंह पटेल) 126

(Political Science / राजनीति विज्ञान)

47. Emergence Of Armed Struggle In Kashmir Valley 128
(Dr. Poornima Sharma, Jawaid Ahmad Mir, Sajad Ahmad Dar)

48. 'इस्लाम आतंक या आदर्श' एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (डॉ. मुमताज़ बेगम) 131

49. टाना भगत आन्दोलन –पुनरूत्थान से राष्ट्रीय स्वतंत्रता की ओर (नीरज कुमार) 134

50. सैनिक सीमा विवाद (डॉ. संजय जैन, डॉ. संगीता परमार) 137

51. उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रूसा) की भूमिका (डॉ. कान्ता अलावा) 139

(History / इतिहास)

52. Dr. B.R. Ambedkar, A Great Constitution Maker -A Histoical Overview (Dr. Praveen O.K) 141

53. महिला उत्थान में बाधक कारक – एक अध्ययन (करूणापति त्रिपाठी) 144

54. आदिवासी समाज की जन–जागृति, शिक्षा एवं भीली भाषा में बालेश्वर दयाल जी का योगदान (लीलू डामोर) 146

55. जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्थिति एक अध्ययन(निमाड़ क्षेत्र के विशेष संदर्भ में) (सवेसिंह मेड़ा) 148

56. आओं भगवान मेघऋषि की पूजा करें (प्रीति राठौर, डॉ. मदनलाल पँवार) 150

(Geography / भूगोल)

57. मण्डला जिले में परिवार नियोजन कार्यक्रम का अध्ययन (दीपिका दोहरे, डॉ. जे.एल. बरमैया) 151

58. ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या वृद्धि प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन – होशंगाबाद जिले के मानव संसाधन के 154
स्थानिक संगठन के विशेष संदर्भ में (डॉ. जितेन्द्र कुमार कमलपुरिया)

59. अधर चम्बल एवं कुंआरी बेसिन (म0प्र0) में पर्यावरण रक्षक सेवाओं का योगदान – पर्यावरण प्रदूषण के सन्दर्भ 156
में एक भौगोलिक विश्लेषण (डॉ. नीलेश कुमार सखवार)

60. मानव संसाधन विकास के सामाजिक अभिलक्षण – साक्षरता का स्तर (जिला होशंगाबाद के विशेष संदर्भ में) 159
(डॉ. जितेन्द्र कुमार कमलपुरिया)

61. होशंगाबाद मैदान की जनजाति का सांस्कृतिक विवरण (डॉ. अर्चना पटेल) 161

(Sociology / समाजशास्त्र)

62. A Sociological Study Of Residential Patterns Of A Slum Area Of Bhopal City (M.P) 163
(Farooq Ahmad Ganiee)

63. महामति प्राणनाथ व राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की सामाजिक मान्यताओं का एक अध्ययन (महामति प्राणनाथ 167
व प्रणामी संप्रदाय के विशेष संदर्भ में) (डॉ. शैलजा दुबे, सुयश दुबे)

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) (U.G.C. Jr. No. 64728)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.110 (2017) January To March 2018, Vol. III

टाना भगत आन्दोलन -पुनरूत्थान से राष्ट्रीय स्वतंत्रता की ओर

नीरज कुमार *

प्रस्तावना – टाना भगत आन्दोलन, बिरसा मुण्डा आन्दोलन के बाद जनजातीयों में व्याप्त असंतोष और उस निरंतरता का प्रतीक था जो आन्दोलन ब्रिटिश काल के शोषण और अत्याचार के विरूद्ध झारखण्ड के जनजातीयों ने शुरू किया था। इस बार असंतोष की अभिव्यक्ति उराँव जनजाति में हुई थी। वे अपने सामाजिक - आर्थिक प्रस्थिति से खिन्न थे। उनमें अपने देवी-देवताओं के प्रति अविश्वास और ईसाई पादरियों का प्रभाव बढ़ रहा था। वे अपने स्वर्णिम अतीत के गौरव की पुनर्स्थापना और शुद्ध धर्म में अपनी समस्याओं का समाधान देख रहे थे। यह आन्दोलन सुधरा हुआ और अगला कदम था। टाना भगत आन्दोलन एक अहिंसात्मक आन्दोलन था जो आगे जाकर सिद्धांतों की कई बातों में समानता के कारण गाँधी जी के नेतृत्व में चलाए जा रहे स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए समर्पित हो गया।[1]

पुनर्रूत्थानवादी टाना भगत आन्दोलन – इस आन्दोलन का शुभारंभ जतरा भगत ने अप्रैल 1914 में किया जिनका जन्म गुमला जिले के विशुनपुर प्रखण्ड अन्तर्गत चिंगरी, नवाटोला में सितम्बर 1888 को हुआ था।[2] टाना पंथ की स्थापना करने से पहले वे मति (झाड़-फूक) की शिक्षा लेने के लिए बगल के गाँव हेसराग आया - जाया करते थे। आर0 ओ0 धान ने लिखा है कि ऐसा विश्वास किया जाता है कि मति का प्रशिक्षण लेकर जब वे एक रात घर लौट रहे थे तब उराँवों के सर्वोच्च देवता (धर्मेश) उनके सामने प्रकट हुए और उनसे कहा कि अपना मति का काम और खून के प्यासे प्रेतात्माओं तथा पशु बलि मांगने वाले अन्य देवी-देवताओं का त्याग कर दो। भगवान (धर्मेश) ने उनसे कहा कि सभी तरह के पशु बलि रोक दो और मांस खाना और दारू पीना छोड़ो, उन खेतों में हल जोतना छोड़ दो जहां गायों और बैलों से क्रूरता होती हो।[3] इसे जतरा भगत ने गीत में ऐसे व्यक्त किया-

टाना बाबा टाना भुतनी के टाना
टाना टून टाना
कासा पीतर मना, दोना पतरी खाना
मांस मदिरा मना, दारू मना
टाना बाबा टाना[4]..........................

प्रत्येक वृहस्पतिवार को लोग जतरा भगत के प्रवचन और उपदेशों को सूनने आने लगे, उनके अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी। हताश, निराश उराँव जनजातियों में इससे उत्साह का संचार हुआ। जतरा भगत ने अपने उपदेशों में जो बातें कहीं उनमें प्रमुख थी- मांस नहीं खाना, मदिरा नहीं पीना, पशु बलि नहीं देना, भूत प्रेत का अस्तित्व नहीं मानना, यज्ञोपवीत धारण करना, आंगन में तुलसी चौरा स्थापित करना, गाय की सेवा करना, जीव हत्या न करना, अंग्रेजों और जमींदारों की बेगारी न करना, सभी से प्रेम करना, कासा पीतर में नहीं खाकर दोना पतरी में खाना, शुद्धता और पवित्रता पर विशेष ध्यान देना आदि। इस प्रकार जतरा भगत ने टाना पंथ की स्थापना की। टाना का अर्थ हैं टानना या खींचना अर्थात् कुड़ुख धर्म में आ गई बुराईयों को खींचकर या टानकर बाहर निकालना। इस तरह बुराईयों से मुक्त विशुद्ध और पवित्र कुड़ुख धर्म को मानने वाले टाना भगत है। कुड़ुख धर्म में आ गई बुराईयों को, गांवो की बुरी और सताने वाली प्रेतात्माओं और ऐसे देवी देवताओं को जिन्हें संतुष्ट करने के लिए बलि चढ़ायी जाती थी उन्हें टानकर या खींचकर गांव से बाहर कर दिया गया। जतरा भगत ने इसके लिए मति वाले तरीके के मंत्र और प्रार्थनाओं को अपनाया; जैसे-

टाना बाबा टाना भूतनीके टाना
टाना बाबा टाना टन टून टाना
टाना बाबा टाना कोना-कूची भूतनी के टाना[5]

टाना भगत आन्दोलन के फैलते ही टाना भगतों ने जमींदारों और अन्य गैर आदिवासियों का काम करना बन्द कर दिया। जतरा भगत ने लोगों से कहा कि ईश्वर नहीं चाहता है कि लोग जमींदारों, अन्य धर्मावलंबियों तथा गैर आदिवासियों के यहां कुलियों एवं मजदूरों का काम करें। उसने घोषणा की कि ईश्वर ने उसे जनजातियों का नेतृत्व सौपा है और आपलोगों को यह समझाने को कहा है कि वे धर्मेश की पूजा करें क्योंकि इसी से उनकी इच्छाएं पूर्ण होगी।

विचारनीय बात यह है कि जतरा भगत ने टाना भगतों के जो नियम स्थापित किए वह जनजातीय जीवन शैली का सामान्य अंग नहीं था क्योंकि उनमें मांसाहार, हड़िया-दारू का सेवन, पशु बलि, आखेट आदि आम बात थी। उराँव लोगों में तो प्रत्येक बारह वर्ष पर होने वाले जनीशिकार जैसी परंपरा प्रचलित थी जिसमें उराँव महिलाएं पुरूष वेष में शिकार करने निकलती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि टाना पंथ के नियम क्रांतिकारी थे लेकिन इसकी शुरुआत बिरसा मुण्डा ने कर दी थी। जिन बुनियादों पर मुण्डाओं का बिरसा आन्दोलन खड़ा हुआ था उन्ही बुनियादों पर और उसी के प्रभाव से...उरांवों का टाना अन्दोलन प्रारंभ हुआ।[6] परंतु जतरा भगत का टाना पंथ उसका अगला कदम और सुधरा हुआ रूप था। उन्होंने बेगारी और विभिन्न तरह के करों और शोषण के विरूद्ध जो आन्दोलन चलाया उसमें तथा जीवन में अहिंसा, प्रेम, शुद्धता, पवित्रता, जीव हिंसा निषेध, मद्यनिषेध, सादगी, शाकाहार और शोषण-उत्पीड़न के प्रतिकार के लिए अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा का तरीका अपनाना यह सब टाना भगतों को महात्मा गांधी के विचारों के निकट ला देता है। और जब राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान टाना भगतों का सम्पर्क महात्मा गांधी के विचारों से हुआ तब टाना भगतों ने अपने नियमों को और परिष्कृत तथा समृद्ध किया।

*शोधार्थी (राजनीति विज्ञान) राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड) भारत

जतरा भगत के कृत्यों से जिन जमींदारों आदि के स्वार्थों पर आँच आ रही थी उन लोगों ने इस आन्दोलन को दबाने के प्रयास किए। अपने अनुयायियों को मजदूरी करने से रोकने के अपराध में जतरा भगत को उनके सात अनुयायियों के साथ गुमला के अनुमण्डलीय दण्डाधिकारी की कचहरी में मुकदमा चलाया गया और 1916 ई० में डेढ़ वर्ष की सजा दी गई।' उन्हें इस शर्त पर रिहा किया गया कि वे अपने नए विचारों का प्रचार नहीं करेंगे और शांति बनाए रखेंगे। जेल के बाहर आने के 2-3 माह बाद ही 28 वर्षीय जतरा भगत का देहान्त 1918 में हो गया। लेकिन जतरा भगत की गिरफ्तारी और छूटने के तुरंत बाद देहावसान हो जाने के बावजूद यह आन्दोलन शिथिल नहीं हुआ बल्कि और तेजी से पलामू और हजारीबाग जिलों में भी फैल गया। विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नेताओं ने इस आन्दोलन का नेतृत्व संभाल लिया। चिंगरी में हनुमान भगत, मांडर क्षेत्र में शिबू भगत, घाघरा क्षेत्र में बेलगाड़ा निवासी बलराम भगत, विशुनपुर थाना के उरांवा गांव के भीखू भगत, और सिसई थाना के बभूरी गांव की देवमनियां टाना आन्दोलन के प्रचारक और नेतृत्वकर्त्ता हुए। कहा जाता है कि टाना पंथ के इन प्रचारकों ने उस समय के रांची, पलामू और हजारीबाग जिलों में लगभग 260000 अनुयायी बना लिए थे।[8]

माण्डर क्षेत्र में शिबू और माया ने 1919 में आन्दोलन संचालित किया। 1919 के मार्च के मध्य में शिबू, माया और कुछ अन्य (सूकरा, सिंघा और देबिया) को गिरफ्तार किया गया और दोषसिद्ध हुए। इसके बाद भी पूरा आन्दोलन समाप्त नहीं हुआ था, जैसा कि छोटानागपुर के आयुक्त 15 अक्टूबर, 1919 को सरकार को लिखा कि 19 दिसंबर को तुरिया भगत और जीतु के नेतृत्व में कुडू थाना से दो मील दक्षिण, टीको के एक सभा में 400 टाना भगत इकट्ठे हुए। वे लोग कइ प्रस्ताव पास किए जिसमें चौकीदारी कर और जमींदारों को भूमि कर नहीं देना भी शामिल था।[9]

राष्ट्रीय आन्दोलन की ओर – भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का नेतृत्व महात्मा गांधी के हाथों में आने के बाद कांग्रेस संगठन का विस्तार सुदूरवर्ती क्षेत्रों और गांवों-टोलों तक में किया गया। इसी क्रम में 1920 में रांची जिला काँग्रेस समिति गठित की गई। इसके बाद रांची राष्ट्रीय आन्दोलन के परिदृष्य के नजदिक आ गई। कलकत्ता में नवम्बर 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ। जिसमें असहयोग आन्दोलन शुरू करने का प्रस्ताव पारित हुआ। नवम्बर 1920 में कलकत्ता से पद्मराज जैन, भोलानाथ वर्मन, मौलवी जकारिया, अब्दूल रज्जाक और सुन्दर तक सिरोबी अधिवेशन में सम्मिलित होकर रांची लौटे और आन्दोलन का प्रचार करने लगें। स्थानीय नेताओं गुलाब तिवारी, नागरमल मोदी, मुहम्मद युसूफ और मुहम्मद इशाक आदि नेताओ ने रांची के आसपास जोरदार प्रचार अभियान चलाया। 31 जनवरी 1921 को रांची में उराँवों की सभा को गुलाब तिवारी ने संबोधित किया। 1 फरवरी को मौलवी उस्मान ने उराँव, मुण्डा, भुईयां, घासी और अन्य गैर आदिवासियों के बीच सभा की। इस तरह 1 फरवरी से 13 फरवरी तक सेन्हा (पुलिस स्टेशन लोहरदगा), इमचुआ, मधुकम, इटकी, घाघरा, ओरमाँझी, कोकर, तमाड़, गुमला, बुण्डू, डोरंडा, काडूम, कारो और साउसोपा आदि में रांची के आदिवासियों के बीच गांधीजी के संदेशों को पहुंचाया।[10]

इस प्रकार स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं ने छोटानागपुर के आदिवासियों और टाना भगतों के बीच कांग्रेस का प्रचार किया और महात्मा गांधी के बारे में बताया और उन्हें असहयोग आन्दोलन से जोड़ने का प्रयास किया। अत: टाना भगतों का जुड़ाव असहयोग आन्दोलन के माध्यम से गांधीजी से हुआ। टाना भगत कुडू थाना के सिन्दू भगत के नेतृत्व में पहली बार राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुए। इस प्रकार टाना भगत आन्दोलन जिसकी शुरूआत एक आर्थिक और धार्मिक आन्दोलन के रूप में हुआ था अब राजनीतिक आन्दोलन के रूप में स्वयं को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ लिया।[11]

टाना भगतों का कांग्रेस और राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित हो जाने से छोटानागपुर में स्वतंत्रता आन्दोलन को बल मिला, कांग्रेस को समर्पित कार्यकर्ता प्राप्त हो गए। खादी पहनना चरखा से सूत काटना, गांधी टोपी धारण करना, आंगन में कांग्रेस का ध्वज फहराना उनकी पहचान हो गई। असहयोग आन्दोलन में टाना भगतों के सम्मिलित होने के प्रभाव के बारे में रांची के उपायुक्त छोटानागपुर के आयुक्त को 9 मार्च 1921 को बताया,' टाना भगत आन्दोलन लगातार तकलीफ दे रहा है और पर्याप्त सबूत है कि आन्दोलनकारियों ने इसे असहयोग आन्दोलन से जोड़कर आन्दोलन को नया जीवन देने का प्रयास किया है।'[12]

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 37वाँ अधिवेशन गया में हुआ। टाना भगत इसमें सक्रिय रूप से भाग लिये। वहां वे कांग्रेस के नियमों और विचारों से प्रत्यक्ष रूप से वाकिफ हुए। टाना भगतों को गांधीजी से मिलने की इच्छा थी। लेकिन उस समय गांधीजी जेल में थे। अधिवेशन की बातों को टाना भगतों ने सुदूरवर्ती क्षेत्रों में पहूंचाने का काम किया।

1928 में 12 फरवरी से 4 अगस्त के बीच बारडोली में लगान में सुधार एवं कमी सम्बन्धित मांग को लेकर गांधीजी की प्रेरणा से सरदार पटेल के नेतृत्व में सत्याग्रह हुआ। इसकी भनक टाना भगतों को लगते ही वे यहां भी आन्दोलन के समर्थन में जमींदारों को कर देना बंद कर दिया। इसके विरूद्ध कार्रवाई करते हुए जमींदारों ने उनकी जमीनें निलाम कर दी। 1937 में बिहार में कांग्रेस के मंत्रिमंडल के गठित होने पर उन्हें भूमि लौटाने के प्रयास किए गए लेकिन कई प्रयासों के बावजूद आज भी इस समस्या का पूरा समाधान नहीं हो पाया है।

टाना भगतों ने असहयोग आन्दोलन के बाद नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा भारत छोड़ो आन्दोलन में कांग्रेस और गांधीजी के निर्देशों का पालन करते हुए सक्रिय भाग लिया गिरफ्तार हुए और जेल की सजाएं भूगते।

झारखण्ड में ब्रिटिश काल के षोषण और अत्याचार के विरूद्ध हुए प्रसिद्ध आन्दोलनों में टाना भगत आन्दोलन का महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसे बहुत कम जनजातीय आन्दोलन हुए हैं जो मुख्य धारा के राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े हो। जो जनजातीयों के राष्ट्रीय एकीकरण में भी सहायक सिद्ध हुआ। टाना भगत हजारों की संख्या में आज भी उसी रूप में मौजूद है जैसा आजादी से पहले हुआ करते थे। वे सब विशेषताएं आज भी टाना भगतों में देखी जा सकती है जो आजादी से पहले उनमें पायी जाती थी। वे गांधीजी के बताए मार्ग पर आज भी चलते हैं। टाना भगत गांधीजी के अनुयायी के रूप में पहचाने जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रेखा ओ0 धान, 'द प्रॉबलम्स ऑफ दी टाना भगत, बुलेटिन ऑफ दी बिहार ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट, राँची, वोलूम 2, नं0-1, जुलाई 1960, पृष्ट-160
2. बालमुकुन्द वीरोत्तम, झारखण्ड – इतिहास और संस्कृति, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2016, पृष्ट-346
3. रेखा ओ0 धान, बुलेटिन, पृष्ठ-160
4. विजयपाणि पाण्डेय, प्रकाशचन्द्र उराँव, 'जतरा भगत एवं टाना

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) (U.G.C. Jr. No. 64728)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.110 (2017) January To March 2018, Vol. III

आन्दोलन, बुलेटिन बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची, वोलुम–37, जनवरी 1998, पृष्ठ–53

5. एस0सी0 राय, उरांवन रिलीजन एण्ड कस्टम्स, ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली, 1985 (1928), पृष्ठ–348–49
6. कुमार सुरेश सिंह, बिरसा मुण्डा एण्ड हिज मूवमेंट : ए स्टडी ऑफ मिलेनेरियन मूवमेंट इन छोटानागपुर, सिगुल, कलकत्ता, 2002 (1983), पेज–186
7. पी0सी0 राय चौधरी, गजेटियर ऑफ इण्डिया, बिहार, 11 राँची, 1970, पृष्ठ–73
8. राय चौधरी, गजेटियर, पृष्ठ–73–74
9. रिपोर्ट ऑफ डी0आई0जी0 पुलिस, छोटानागपुर, दिनांक 20 अप्रैल, 1919
10. सुशीला मिश्रा, हिस्ट्री ऑफ दी फ्रिडम मूवमेंट इन छोटानागपुर (1885–1947), काशी प्रसाद जयसवाल रिसर्च इंस्टिच्यूट, पटना, 1990, पृष्ठ–17
11. रेखा ओ0 धान, बुलेटन, पृष्ठ–160
12. के0के0 दत्ता, फ्रिडम मूवमेंट इन बिहार, वोलूम 1, (1857–1928) गवर्नमेंट ऑफ बिहार, जुलाई, 1957, पृष्ठ–338

****

January To March 2018
E-Journal
U.G.C. Journal No. 64728

RNI No. - MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 5.110 (2017)

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)
(U.G.C. Approved Journal)

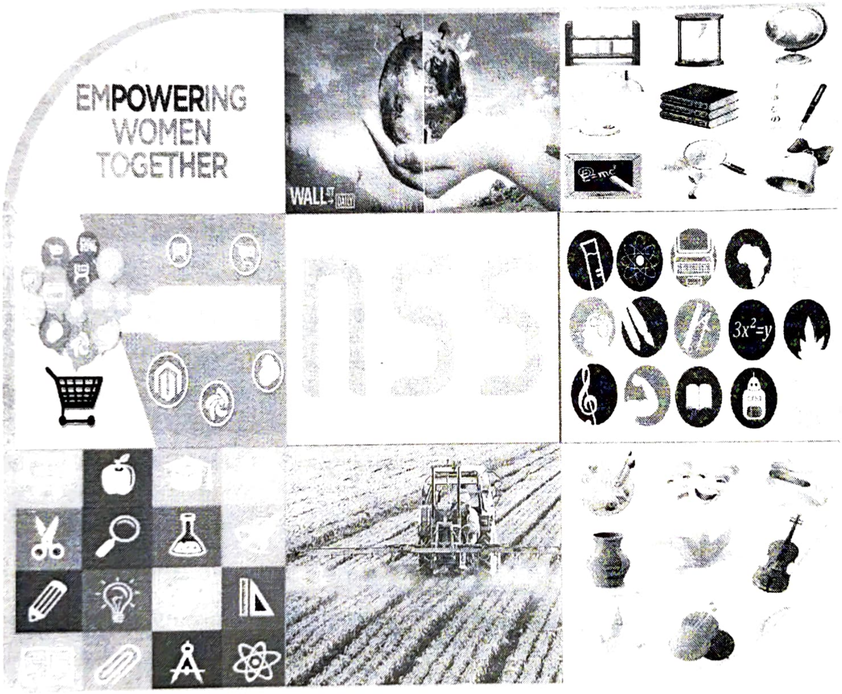

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

154. भीमल रेशों द्वारा धागों का निर्माण कर उत्तराखण्ड के घरेलू उद्योगों के लिए एक योगदान (गुँजा सोनी) 447

155. Career Lattice Model - A Meaningful link between pre-service, in-service, and continuing education (Dr. Premlata Gandhi) 450

156. पर्यावरण अध्ययन विषय के शिक्षण में प्रयुक्त शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का अध्ययन (रेखा दाधीच, डॉ. अनिता कोठारी) 453

157. Robo Tutor- A Research on Future of Teaching (Dr. Premlata Gandhi) 455

158. A Study on Financial Performance of Stock Exchange in India (Chanda Parmar) 459

159. Analyzing Impact Of Online Social Platform On Internet Buying Behavior (Dr. Ganpat Joshi) 463

160. Practises for Building Quality Software with Automation: A Practical Approach (Vikas Kumar Choudhary, Dr. Sanjay Chaudhary) 466

161. बदलते परिदृश्य में अभिजात महिलाओं की स्थिति की भूमिका (डॉ. रोमा श्रीवास्तव) 469

162. महेश्वर हथ करघा उद्यमियों में योगासन के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना (प्रतिष्ठा दासौंधी, डॉ. मंजु शर्मा) ... 471

163. मध्यप्रदेश में आदिवासी जनजातियों द्वारा वनोषधियों का संग्रहण के आर्थिक महत्त्व तथा संभावनाओं का भौगोलिक अध्ययन (डॉ. सुमनलता पुरोहित, मिताली पॉल) 473

164. मध्यप्रदेश में सूचना का अधिकार का क्रियान्वयन : एक समीक्षा (डॉ. ओम प्रकाश परमार) 476

165. A Study on Green Initiative Product of FMCG Companies (Mrs. Usha Sharma, Dr. Deepak Singh)..... 478

166. मध्यप्रदेश पंचायत निर्वाचन (2004-2005) एक विश्लेषणात्मक विवेचन (डॉ. अमृतलाल परमार) 481

167. Influence of Period of Investment on the Investment Decision Factors (Mradul Panthi) 484

168. Customer Satisfaction In Online Banking Services - An Over View (Suman Gunjetia, Dr. Payal Sachdev) 487

169. Issues And Challenges Related To Pedagogical Strategies For Inclusive Education (Dr. Monisha Mishra, Alka Asati) 490

170. मध्यप्रदेश के निमाड़ में पर्यटन उद्योग की समस्याऐं और समाधान (डॉ. सुनील मोरे) 494

171. जनजातीय विकास का भौगोलिक अध्ययन (संदीप कुमार सिंह, डॉ. सुमन सिंह) 496

172. Planning and Control System in Banks in India : Some Aspects (Dr. Sushma Maheshwari) 498

173. भारिया जनजाति पर वैश्वीकरण का प्रभाव (डॉ. पूजा तिवारी) 506

174. डॉ. भीमराव अम्बेडकर का राजनैतिक चिन्तन (डॉ. नवीन कुमार, पुष्पा साकेत) 508

175. महिला सशक्तिकरण एक विधिक अध्ययन (राकेश कुमार चौरासे) 510

176. महिलाओं के उत्थान हेतु राष्ट्रीय कानूनों का एक विधिक अध्ययन (कमलेश मौर्य) 512

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) (U.G.C. Jr. No. 64728) 506
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.110 (2017) January To March 2018 E-Journal

भारिया जनजाति पर वैश्वीकरण का प्रभाव

डॉ. पूजा तिवारी *

प्रस्तावना – वैश्वीकरण से तात्पर्य विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था को सक्रिय रूप से आपस में जोड़ना होता है। वर्तमान युग वैश्वीकरण का युग है, इस युग में 'निजीकरण' तथा 'उदारीकरण' को बढ़ावा दिया जा रहा है। संचार क्रांति के कारण विश्व के सभी देश समीप आते जा रहे हैं। वैश्वीकरण एक ऐसा मंच है जहाँ जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज का निर्माण कर एक साथ कार्य करते हैं। आज वैश्वीकरण का प्रभाव मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा प्रौद्योगिक जीवन पर पड रहा है। विगत दशकों में प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है, जिन्हें हम वैश्वीकरण के रूप में देखते है। भारत में भी वैश्वीकरण का प्रभाव तीव्रता से देखने को मिलता है। भारत में अधिकांश राज्यों में जनजातियाँ निवासरत् है अत: वैश्वीकरण का प्रभाव जनजातियों पर भी पड़ा है। वैश्वीकरण एक बहु-आयामी एवं बहुलवादी प्रक्रिया है, जो विश्व को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक रूप से समायोजित करती है।

शोध प्रविधि – इस शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक विषय सामाग्री के आधार पर शोध पत्र को तैयार किया गया है जिसके हेतु पत्र-पत्रिकाओं को भी अध्ययन का आधार बनाया गया है। इसके साथ-साथ जनजातीय परम्पराओं और विद्वानों का भी मार्गदर्शन प्राप्त किया गया है।

समस्या – भारत में वैश्वीकरण से जुड़े अर्थिक सुधारों यानि उदारीकरण तथा निजीकरण की शुरूवात सन् 1991 से हुई है। वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न समाजों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्र से लेकर संगीत, वेशभूषा एवं मीडिया के क्षेत्र तक अत्यंत द्रुत गति से प्रभावित हुए है।

उद्देश्य – 80 के दशक में उभर कर आया एवं 90 के दशक में लोकप्रियता हासिल करने वाला वैश्वीकरण या भूमंण्डलीकरण शब्द आधुनिक विश्व की ऐसी प्रघटना है, जिसने विश्व के सभी विकसित एवं विकासशील देश एवं उनकी आर्थिक राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। सूचना प्रौद्योगिक क्रांति ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तीव्रगति एवं नये आयाम प्रदान किए है।

संवैधानिक प्रावधानों द्वारा नामांकित विशेष पिछड़ी जनजातियों में 'भारिया जनजाति' प्रमुख है, जिन्हें पूर्व में 'आदिम जनजाति' भी कहा गया।

समाधान – भारिया जनजाति मुख्य रूप से छिन्दवाड़ा जिले के 'तामिया' तहसील के 'पाताल कोट' नामक स्थान पर पायी जाती है। पाताल कोट अर्थात् बहुत गहराई पर रहने का स्थान पाताल कोट छिन्दवाड़ा मुख्यालय से लगभग 70 किलोमीटर दूर है जो लगभग 2750 से 3250 फीट गहराई पर स्थित है। भारिया जनजाति यहाँ पर लगभग 500 वर्षों से अधिक समय से निवासरत् है। 'भारिया' स्वयं को गोंड के 'छोटा भाई' कहते हैं तथा द्रविड़ समूह से है।

भारिया जनजाति के लोगों का रंग काला, औसत कद पतला काली आंखे, चौडी नाक आदि शारीरिक विशेषताएं रखते है। भारिया स्त्रियाँ सुंदर होती है, यहाँ पर जनजाति के मुखियां को 'पटेल' कहा जाता है, इनमें भूमका पड़हाट कोटयार भी होते है। पाताल कोट में कुल 24 गांव तथा 15 हेमलेट है। इनमें मुख्य गांव 'रातेड', चिमटीपुर, गैलडुब्बा, डोगरी, सहारा, गुज्जा आदि है।

भारिया जनजाति की कुल 51 गोत्र है जिनमें से 16 गोत्र अभी भी अस्मिन्व में मुख्यरूप से पायी जाती है।

भारिया जनजाति के पुरूषों का मुख्य परिधान धोती, कुर्ता, बंडी साफा जबकि महिलाओं में सेंदरी साडी एवं पोलका का प्रचलन मूल रूप से है। भारिया महिलाए 'टैटू' गुदवाने की दिवानी होती है, औझा औरत इसे बनाती है, महिलाएं भौंहों के उपर धनुष कार लाइन एवं बिडियों द्वारा सजती है। गहनों में मुख्य रूप से चुल्की, मुंदरी, तोड़ा, हंसली, बिनोरिया आदि पहनती है। यहां पर मुख्य रूप से कर्मा, साटय, भाटम एवं सैला नृत्य होते है।

भारिया जनजाति हिंदु धर्म एवं देवी देवताओं की पूजा करते है, प्रमुख देवताओं में 'बूढ़ादेव, दुल्हादेव, नागदेव, बड़ा महादेव, बरूआ, भीमसेन' आदि है। मुख्य त्यौहार होली, नागपंचमी, दशहरा, दीवाली, ज्वारे, शिवरात्रि आदि है।

भारिया जनजाति के प्रमुख वाद्ययंत्र नगाड़ा, शहनाई, बासुंरी चकुली, तंबुरा, चिकारा, घुंघरू, खड़ताल, मदार एवं ढोल आदि है। यहाँ पर मुख्य मेलों के रूप में 'मेधनाद' तथा 'मढ़ई' है। जो चैत्र पूर्णिमा में लगता है।

इस क्षेत्र में आर्थिक आधार के रूप में लघुवनोपज, जडी-बूटी संग्रहण, वांस कलाकृति, झाडू बनाना, दरवाजे बनाने का काम आदि है।

पाताल कोट में भारिया जनजातिय क्षेत्रों में मकान कच्चे होते है, घर के सामने चार खंभो से दालान बनाया जाता है। जो महुआ, गुल्ली एवं जाम की गुठली सुखाने के काम आता है। यहाँ पर मुख्य रूप से पेज, ज्वार, कुटकी, कोडो, चावल, माढ़ मटुरा की रोती, आम की गुठली आदि खाद्य पदार्थ होते है। ज्वार के आटे एवं महुए से मीटी, रोटी बनायी जाती है।

जनजाति के लोगो, औषधीय पौधों की पहचान एवं उनके उपयोग की जनकारी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांरित होती है। मुख्य रूप से यहाँ पर अधजीरा, अडूसा, कालमेछ, सफेद मुसली, कालीहल्दी, चितवार, सिताप, हर्रा, बहेड़ा मिलवा अर्जुन, गिलॉय चिरौंजी रूपेगंधा आदि अनेक औषधीय दुकंत पौधों से दवाईयां बनाने का कार्य किया जाता है।

भारिया जनजाति आधुनिकता एवं सभ्यता से परे है, इसलिए उनके विकास के विषय में वे अनभिज्ञ है, किन्तु वैश्वीकरण के प्रभाव से भारिया जनजाति समाज अछूता नही है।

* सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, जिला-छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत

भारिया जनजाति की संस्कृति रंग बिरंगी एवं अनोखी है। आधुनिकता के कारण उनकी वेशभूषा में परिवर्तन आया है। अब ये लोग पैंट–शर्ट एवं महिलाएं साडी अच्छे तरीके से पहनती है।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण का प्रभाव भारिया जनजाति पर भी देखने को मिल रहा है। अब भारिया लोग अपने मूल गृह ग्राम से निकल कर दूसरी संस्कृति के लोगों के सम्पर्क में सहजता पूर्वक आ रहे हैं। ये लोग पाताल कोट की अपनी दुनिया से बाहरी दुनिया में सम्पर्क बनाने जा रहे है, अब वहां पर प्राथमिक शाला, पेय जल व्यवस्था, आंगनवाड़ी केन्द्र शासन द्वारा व्यवस्था की गई है। अब ये लोग मुख्य बाजार से भी सामान खरीदते है, तथा अपने उत्पादों को बाजार में बेचते है एवं कृषि कार्य में भी रूचि रखते है। अब ये लोग संचार क्रांति से संबंधित उत्पादों का उपयोग करना भी सीख रहे हैं। वर्तमान समय में ये लोग निकटतम शहरों के निजी एवं शासकीय शिक्षण संस्थाओं तथा स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ लेने में रूचिकर हैं। भारिया जनजाति में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक जीवन में नये परिवर्तन वैश्वीकरण की देन है।

निष्कर्ष – भारिया लोग स्वभाव से ईमानदार सीधे सादे एवं निडर होते है, किन्तु वर्तमान में उनका सम्पर्क नगरीय क्षेत्रों से होने लगा है। शिक्षा एवं आधुनिकीकरण संस्कृतिकरण आदि के प्रभाव से साक्षरता दर बढ़ने के नावजूदभी आज भी ये लोग सामाजिक, आर्थिक स्थिति में तुलनात्मक रूप से पिछडे सावित हो रहे है। पिछडने का मुख्य कारण निर्धनता एवं जागरूकता की कमी है। आवश्यकता इस बात की है कि अब वैश्वीकरण के समस्त उपयोगी पक्षों का भारिया जनजाति पर पूर्णत: प्रभाव पडे इस हेतु निजी संस्थाओं एवं शासकीय तौर पर प्रयास पूर्णत: ईमानदारी से किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पटेल/बघेल: वैश्वीकरण: औचित्य एवं विकास दिल्ली पब्लिकेशन्स।
2. हसनैन नदीय :- जनजातीय भारत–दिल्ली पब्लिकेशन्स
3. म0 प्र0 की जनजातीय :- इन्टरनेट
4. भारिया जनजाति :- इन्टरनेट
5. पाताल कोट में भारिया :- इन्टरनेट

****

International Journal of Advanced Science and Research
ISSN: 2455-4227
Impact Factor: RJIF 5.12
www.allsciencejournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 44-49

Taxonomical studies of family Poaceae and their distribution in central Jabalpur, MP

Suresh Prasad Saket
State Forest Research Institute, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

Abstract
The grass family (Poaceae) is usually well known taxonomically. The research work is based on identification, nomenclature, classification with their taxonomy hierarchy. These are characterized and classified according to variety of morphological characters, particular those of inflorescence and spikelets. The extensive and intensive trips are conducted throughout of the study area in 2015 to 2016. In present study, a total 26 grass species are documented with their registration number. An artificial key is provide for these genera and species whenever there are two or more taxa. Hence, there are two species reported first time for the flora of Jabalpur viz., *Avena fatua* L. and *Chloris barbata* L. For each taxa the correct name, vernacular name, detailed taxonomic characters, flowering & fruiting time and habitats are mentioned.

Keywords: taxonomy, artificial keys, distribution, herbarium

Introduction
The family *Poaceae* is the second largest family amongst monocotyledonous plants, which is of worldwide distribution. Grass which refers to any of the low, green, non-woody plants belongs to the large family of *Poaceae*. This family contains between 500 and 650 genera and about 10,000 species [17]. Poaceae are most ecologically and economically important plant families [15].

Poaceae are generally characterized by their long, narrow leaves which form sheaths around their stems and in some, their flower lacks petals and sepals. Their roots are generally fibrous and branching with an extensive underground network or surface stems. The success of grasses is due to their ability to withstand being grazed or mowed [5]. The family Poaceae has cylindrical stems and distinct nodes and internodes. Their leaves are simple, alternate, arranged in two vertical rows or distinctions. *Poaceae* flowers are usually hermaphrodite, protandrous, sometimes unisexual but monoecious, zygomorphic and hypogynopus. They are usually bisexual.

Morphological similarities between grasses and sedges are close relationship of these families. However, plant taxonomists now attribute these similarities to convergent evolution, and place Poaceae and Cyperaceae in different orders [4, 2, 3, 1, 8, 18].

The aims and objectives of the present paper are mainly to get taxonomic information of grasses and their distribution in Jabalpur region.

Material & Methods
Extensive field visits were undertaken to different localities of Jabalpur city and surrounding areas of throughout the year (various seasons). Field notes were made by the location and plant habit. Inflorescences of the specimens were recorded by photographs. The collected specimens were kept immediately into the plastic bags to identify and classify systematically. The specimens have been observed and described in detail. The collected fresh specimens were identified on the spot or in the laboratory with the help of standard floras like Flora of British India by Hooker [6, 12, 11, 16, 10, 14].

Herbarium preparation
The traditional herbarium method also adopted from Santapau [13, 7] and the prepared herbarium specimens was confirmed at S.F.R.I., Jabalpur (M.P.). Various experts were also consulted for identification, their systematic position and nomenclature of the species, genera and families and other literatures. An artificial key to the species were also constructed.

Taxonomic keys for Identification
1. Lower glumes usually well developed:
1a. Racemes digitate. Upper glumes with globular- tipped ………………...*Alloteropsis*
2. Inflorescence interrupted by spathes:
2a. Spikelets in groups of threes, awn slender…………….…*Apluda*
3. Inflorescence compounds, variously branched:
3a. Lemmas 3- awned from the tip………*Aristida*
4. Lower glume of sessile spikelet not branched, not:
4a. Rugose, wingless……...….*Borthriochloa*
5. Lower glume present, shorter than the upper glume:
5a. Spikelets dorsally compressed. Lower glume turned towards rachis……......*Brachiaria*
5b. Lemma 1-per spikelet………*Cynodon*
6. Inflorescence not feathery. Spikelets not covered with silky hairs:
6a Spikelet not subtended by bristles ……*Dactyloctenium*
7. All spikelets both sessile and pedicelled, in the racemes:
7a. More or less alike, glumes herbaceous, greenish…..*Dicanthium*
8. Lower glume completely absent:
8a. Upper lemma with hyaline, flat margins…….*Digitaria*
9. Lower glume present, shorter than the upper glume:

9b. Lower lemma awned or aristae………*Echinochloa*
10. Spikelets awnless. Born in digitate spike……*Eleusine*
11. Flowers 3- many per spikelet...*Eragrostis*
12. Lower glume not pitted:
12a. Upper glume of the sessile spikelets awnless or very shortly awned:
12b. Upper lemma of sessile spikelets with 6- 12 cm long awn…*Heteropogon*
13. Inflorescence simple, unbranched raceme or spike:
13a. Spikelets ellipsoid. Upper lemma transversely Rugose………..*Setaria*
14. All spikelets bisexual or with male, barren and bisexual spikelets intermixed:
14a. Tall reed – like grasses; panicle large feathery or fan-shaped.
14b. Rachis fragile, breaking up at maturity. Spikelets 2-flowered… *Saccharum*

***Alloteropsis ciminina* (L.)** Stapf.
References: Parain. Fl. Trop. Afr. 9. 487. 1919; Bor. in Ind. For. Rec. 2 (1): 67. Pl. 4. 1941 & Grass. Brum. Cey. Ind. Pak. 279. 1960; Maheshwari Fl. Delhi 387. 1963; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 284. 1996.
Erect, delicate, annual grass. Culms and leaf margins clothed with long, horizontal cilia. Nodes somewhat swollen. Leaves ovate- lanceolate. Racemes spike- like, borne on the top of a slender, hairy peduncle. Spikelets green, solitary or clustered. Grains elliptic- oblong.
Fls. Frts. : August - November
Distribution : Most of the Jabalpur.
Accession No. : SFRI-2888/4964

Apluda mutica L.
References: Sp. Pl. 82 1753; Bor. Grass. Burth. Cey. Ind. Pak. 93. 1960; Oommachan Fl. Bhopal 406. 1977. *A. aristata* L. Amon Acad. 4: 3031. 1756; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 284. 1996.
Erect, tufted, leafy, perennial grass, branching from the base. Upper leaf- sheaths dilated into spathes with subulate imperfect blades. Culms many noded. Leaves linear-lanceolate. Inflorescence a leafy panicle, solitary, simple racemes or spikes, each enclose in a spathe. Spikelets in trios, one sessile, two pedicelled.
Fls. Frts. : August- October
Common name : Fulera
Distribution : Sidha baba of Jabalpur.
Accession No. : SFRI-11844/12429

Aristida satacea Retz.
References: Obs. Bot. 4: 22. 1786; Hooker f. Fl. Brit. India 7: 225. 1896; Maheshwari Fl. Delhi 398. 1963; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 285. 1996.
Erect or geniculately ascending, filiform grass. Leaf – sheaths glabrous. Stems smooth. Panicles inclined, open or contracted. Branches filiform or capillary. Glumes linear, involucral glumes awaned, floral glumes subequal or the middle on the longest: callus bearded with long hairs.
Fls. Frts. : September- November
Local name : Lupsari. Jhadu bahari.
Distribution : Infront of the Biological Science Dept.
Accession No. : SFRI-16447/8303

***Avena fatua* L.**
Annual, herbs. Fibrous root. Erect stems 50–150 cm. Hariy, or glabrous, or tufted, or ascending, 30 cm. Spherical. Hollow, glabrous, hairy. Leaves simple, alternate, 10–45 cm. rough, green, linear, or lanceolate, entire, acute. Sheathing. Parallel. Inflorescence Spikelets, or panicle. Pedicels, or spike 2 flowers. Grains, ovoid. 2–5 mm. Smooth.
Fls. & Frts. : January – June.
Local name : Wild oat
Distribution : Cultivated oat field.
Distribution : It grows in to the crops field in Jabalpur.

Bothriochloa pertusa (L.) A. Camus.
References: Ann. Soc. Linn. Lyon. (N. s.) 76. 164. 1931; Maheshwari Fl. Delhi 394. 1963; Oommachan Fl. Bhopal 405. 1977; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 287. 1996.
Erect or ascending, slender perennial grass. Nodes with spreading hairs. Leaves linear. Racemes 3-8 digitately fasciculate, joints and pedicels densely ciliate. Sessile spikelets, lower involucral glume with a deep pit above the middle: upper floral glume reduced to an awn. Spikelets narrow, aweless.
Fls. & Frts. : August - December
Local name : Madhen
Distribution : Throughout Jabalpur.
Accession No. : SFRI-9988/5240

Brachiaria Griseb.
1. Spikelets alternate, Upper glumes 7 nerved……………..… ***B. ramosa***
1. Spikelets long, solitary, Lower glumes minute………………*B.* ***reptans***

B. ramosa (L.) Stapf.
References: Fl. Trop. Afr. 9: 542. 1919; Maheshwari Fl. Delhi 397. 1953; Oommachan Fl. Bhopal 405. 1977; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 287. 1996.
Annual with erect or ascending stems, branching form the base. Rooting for the lower nodes. Leaves lanceolate, cordate, and ciliate. Rachis terminating in a spikelet. Spikelets alternate, often in pairs. Upper glumes 7 nerved. Grains broadly elliptic.
Fls. & Frts. : July – November
Local name : Popti
Distribution : Throughout area
Accession No. : SFRI-2205/15067

B. reptans (L.) Gard. & C.E. Hubb.
References: Hook IC Pl. Subtab. 3363: 1938. Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 287. 1996.
Slender annual grass. Stem ascending from a long creeping base, often branched below. Leaves ovate- lanceolate. Ligule a tuft of white hairs. Racemes alternate, sessile or shortly pedunculate. Spikelets long, solitary, glabrous. Lower glumes minute, semilunate and hyaline.
Fls. & Frts. : August - December
Local name : Chimanchara
Distribution : Ranjhi area of Jabalpur

Accession No. : SFRI-2824/5754

Cynodon dactylon (L.) Rers.
References: Syn. Pl. 1: 85. 1805; Hooker f. Fl. Brit. India 7: 288. 1897; Oommachan Fl. Bhopal 407.1977; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur-292. 1996.
Perennials with an underground rhizomes. Culms decumbent-ascending. Leaves linear- subulate, scabrid on the upper surface and margin. Spike 2-6 digitate or umbellate. Rachis flat. Spikelets conduplicate, acute, 1 flowered. Glumes as long as or shorter than lemmas. Grains oblong, brown.
Fls. & Frts. : Throughout of the Year.
Local name : Doob grass
Distribution : Throughout Jabalpur
Accession No. : SFRI-2811/5734

Chloris barbata **(L.)** Sw.
References: Fl. Ind. Occ. 1: 200, 1797; Hooker 7: 292; Cooke 3: 557; Gamble 3: 1272; Haines 3: 1014; Maheshwari 388. *Andropogon barbatus* L. Mant. 302, 1771; Hooker 1.c.: Maheshwari 1.c. Oommachan, 406: 1977.
A tufted perennial grass. Ascending from a much proliferously branched base. Leaves narrowly linear, finely acuminate. Sheaths hairy at base and top. Ligule very narrow. Spikes 6-12, 1- seeded. Spikelets 3- awned, with one perfect flower and 1-3 stalked empty glumes above.
Fls. & Frts. : August - November
Local name : Jhadu ghass
Distribution : Commonly found in sandy soils, throughout of Jabalpur.
Accession No. : SFRI-13461/12374

Dactyloctenium aegyptium **(L.)** Willd.
References: Beauv. Agrost. 72. 1812; Maheshwari Fl. Delhi 392. 1963; Oommachan Fl. Bhopal 408. 1977; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 292. 1996.
Erect or decumbent annual, variable in habit. Culms rooting at the base and from the branched nodes. Leaves distichous narrowly linear, flat. Spikes 2-6 digitately radiating spikelets densely crowded, spreading at right angles to rachis. Grains obovoid –globose, rugose.
Fls. & Frts. : July- November
Local name : Makra
Distribution : Most part of Jabalpur
Accession No. : SFRI-1988/14680

Dendrocalamus strictus (Roxb.) Nees.
References: Linnaeus 9: 476. 1834. Hooker f. Fl. Brit. India 7: 404. 1896. Oommachan Fl. Bhopal 408. 1977. Oommachan & Shrivastava Fl. of Jabalpur 292. 1996.
Culms solid or with a small cavity, culm sheaths with golden brown hairs or glabrescent; leaf blades erect, Inflorescence a compound panicle, with spikelets clustered in globose heads in long spike. Spikelets spiny, hairy. Caryopsis ovoid- sub-globose.
Fls. & Frts. : November – February
Local name : Bans
Distribution : Planted at Ranjhi, Jabalpur.
Accession No. : SFRI-2124/14771

Dicanthium annulatum **(**Forssk.**)** Stapf.
References: Prain Fl. Trop. Africa 9: 178. 1917; Blatter and Mc. Cann. 94: 1935; Oommachan Fl. Bhopal 408. 1977; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 294. 1996.
Aquatic, Stem erect, glabrous, unbranched. Leaves linear or linear – lanceolate & rough. Ligule membranous with rim of short hairs. Inflorescence spikelet. Flowers in racemes. Rachis narrowly winged. Spikelets elliptic.
Fls. & Frts. : August - November
Local name : Barhi
Distribution : Throughout Jabalpur.
Accession No. : SFRI-12330/6719.

Digitaria Heist ex. Fabricius.
1. Spikelets oblong…….***D. adscendens***
1. Spikelet elliptic. …….***D. granularis***

D. adscendens **(**H.B. & K.) Henr.
References: Blumes 1: 92. 1934; Maheshwari Fl. Delhi 389. 1963. Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 294. 1996.
Erect or decumbent, annual grass. Leaves linear or linear – lanceolate. Spikes 2 or more. Spikelets oblong, acute. Floral glume densely bearded with soft. Spreading hairs; hairs at first dull white turning brownish.
Fls. & Frts. : August– November
Local name : Bondrya.
Distribution : Most part of Jabalpur
Accession No. : SFRI-17138/11276.

D. granularis (Trin.) Henr.
Herb, root fibrous. Stem erect annual culms winged, tall, and rarely branched. Leaves linear, apex pointed. Ligule short, membranous. Inflorescence spikelet. Racemes usually digitate, on short common peduncle, spikelet elliptic.
Fls. & Frts. : August – November
Distribution : Most part of the Jabalpur.
Accession No. : SFRI-14960/7563

Echinochloa colonum (Linn.) Link.
References: Hort. Berol 2:209. 1833. Maheshwari Fl. Delhi 393. 1963; Oommachan Fl. Bhopal 410. 1077; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 294. 1996.
Annuals, culms 20- 80 cm tall, erect, decumbent; nodes glabrous; leaves linear- lanceolate, glabrous, scaberulous, apex acute to acuminate; ligule absent. Spikes numerous; spikelets 2- nate, ovate to elliptic – lanceolate, hispid; lower glume membranous, ovate 3-5 nerved; upper glume elliptic – ovate. Grains plano- convex.
Fls. & Frts. : July- November
Local Name : Sama
Distribution : Most of the Jabalpur
Accession No. : SFRI-10319/5632

Elusine indica (Linn.) Gaertn.
References: Fruct. Sem. Pl 1:8. 1788; Hooker f. Fl. Brit. India 7: 1896; Oommachan fl. Bhopal 410. 1977; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 297. 1996.
Annuals; culms tufted, 30-60 cm tall; nodes glabrous; leaves hairy, deep green, usually folded, linear- lanceolate, midrib

thick, acuminate at apex; ligule ciliate rim, membranous; spikes 2-7, digitate; rachis flattened, spikelets ovate, oblong. Lower glume lanceolate, 1- nerved; upper glume lanceolate, 3-7 nerved; lowest lamma oblong- lanceolate. Grains, obtusely trigonous.

Fls. & Frts.	:	July –November
Local Name	:	Pandhar
Distribution	:	Throughout Jabalpur.
Accession No.	:	SFRI-4328/3755

Eragrostis Pal. Beauv.

1. Plant glandular……………….. ***E. pilosa***
1. Plant eglandular………..….2
2. Spikelets longer than pedicels, Flowers panicles…………………. ***E. cilianensis***
2. Spikelets erect, 4 to 10 flowered………………..…***E.unioloides***

E. cilianensis (All.) Vignola - Lutati.

References: Malpighia 18: 386. 1964;Blatter and Mc Cann 237. 1935; Maheshwari Fl. Delhi 384: 1963; Deshpande and Singh 57: 1986. Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 298. 1996.

Annual herbs; culms tufted, terete, 20- 70 cm tall. Erect or geniculately ascending; nodes glabrous; leaves linear-lanceolate, glandular. Glabrous with small. Inflorescence spikelet. Flowers in panicles, erect, ovate, oblong, braches spreading or suberect capillary. Lower glume membranous, ovate – oblong, 1- nerved; upper glume similar, 3- nerved. Spikelets longer than pedicels. Grains globose, reddish-brown.

Fls. & Frts.	:	August – December
Distribution	:	Throughout Jabalpur
Accession No.	:	SFRI-13415/8254

E. pilosa (L.) P. Beauv.

References: Ess. Arost. 71. 162. 1812; Hooker f. Fl. Brit. India 7. 323. 1896; Oommachan Fl. Bhopal 411. 1977; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 298. 1996.

Annual grass. Densely tufted, culms geniculate, usually erect soft. Leaves narrowly linear, scabrous on the margins. Panicles erect or inclined. Spikelets erect, 4 to 10 flowered. Floral glumes 3- nerved. Grains obovoid or ellipsoid.

Fls. & Frts.	:	July – October
Local name	:	Godawari
Distribution	:	Most part of Jabalpur.
Accession No.	:	SFRI-12612/8698

E. unioloides (Retz.) Ness. Ex. Stend.

References: Syn. Pl. Glum 1: 264. 1854; bor in Ind. For. Rec. 2 (1): 130 Pl. 29. 1941 & Grass. Burn. Cey. India Bok. 515. 1960; Oommachan Fl. Bhopal 412. 1977; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 298. 1996.

Annual grasses, solitary or loosely tufted. Leaves linear with a rounded or subcordate base. Ligule a minute scarious rim. Panicle narrow often reduced to a solitary spikelet. Spikelets straw- coloured. Glumes sub equal. Grain pale brown.

Fls. & Frts.	:	July- Nov.
Distribution	:	Most part of Jabalpur.
Accession No.	:	SFRI-2831/16118

Heteropogon contortus (L.) Beauv. Ex. R. & S.

References: Syst. 2: 836. 1817; Maheshwari Fl. Delhi 374: 1963; Oommachan Fl. Bhopal 413. 1977; Deshpande and Singh 67: 1986.-Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 303. 1996.

Perennial tufted grass. Root fibrous. Stem erect or ascending. Leaves narrow, long, scabrid at margins. Ligule truncate, ciliate. Inflorescence spikelet. Spike single, ending in the twisted end of the awns.

Fls. & Frts.	:	July – December
Distribution	:	Most part of the area of Jabalpur.
Accession No.	:	SFRI-6229/18765

SETARIA P. Beauv. Nom.cons.

1. Culms simple or branched. Racemes spiciform………….. ***S. glauca***
1. Culms geniculately ascending glabrous, Panicle linear……… ***S. tomentosa***

S. glauca **(**L.) P. Beauv.

Annual, erect and tufted grass. Culms simple or branched. Leaves linear- lanceolate, tapering to a fine point. Racemes spiciform, variable in length, yellowish at maturity. Spikelet 2- flowered, lower male or barren, upper hermaphrodite; fertile marked with numerous transverse ridges.

Fls. & Frts.	**:**	Rainy Season.
Local name	**:**	Kolia
Distribution	**:**	Most part of Jabalpur
Accession No.	**:**	SFRI-6725/18773

S.tomentosa (Roxb.) Kunth.

References: Rev. Gram. 1: 47. 1829; Maheshwari Fl. Delhi 379. 1963; Oommachan Fl. Bhopal 419. 1977; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 312. 1996.

Loosely tufted annual grass. Culms geniculately ascending glabrous. Leaves linear or narrowly lanceolate, tapering to a fine point. Panicle linear to narrowly lanceolate, solitary spikelets supported by a bristle, Upper glumes shorter than lemmas, 7- nerved. Grains rotundate- ovate.

Fls. & Frts.	:	July – December
Local name	:	Rala
Distribution	:	Polypathar, Jabalpur
Accession No.	:	SFRI-7388/4707

SACCHARUM L.

1. Cultivated; glumes white throughout…………..***S. officinarum***
1. Wild grss; glumes brown below, white above………………..***S. spontaneum***

S. spontaneum L.

References: Mant. 183. 1771; Hooker f. Fl. Brit. India 7: 118. 1896; Oommachan Fl. Bhopal 418. 1977; Oommachan and Shrivastava Fl. Jabalpur 264. 1996.

Very variable, tall, perennial, densely tufted grass. Leaves very long. Narrow- linear- Panicles lanceolate to oblong with white silvey hairy, much exceeding the spikelet; branches whorled. Spikelets paired. Glumes lanceolate – acuminate & grains oblong.

Fls. & Frts.	:	September – December

Local Name : Kans
Distribution : Bai pass Jabalpur area.
Accession No. : SFRI-21197/16152

***S. officinarum* L.**
References: Sp. Pl. 54. 1753; Hooker 7: 118; Cooke 3: 466; Gamble 3: 1185; Haines 3; 1058; Maheshwari 371. Oommachan Fl. Bhopal 418. 1977.
An erect, tall many- nodded plant. Leaves rigid, linear-lanceolate, acuminate, spreading, dropping at the tip. Panicles pyramid, very large, dense, spreading; primary branches verticillate, filiform; glabrous with appressed hairs below the panicles, often waxy, below the nodes, spikelets lanceolate,, with dense, silky, white hairs.
Fls. & Frts. : March – July
Local name : Ganna
Distribution : Gwarighat Jabalpur.
Accession No. : SFRI-21198/……..

Sporobolus glaucifolius Hochst. Ex. Steud.
References: Syn. Pl. Glum. 154: 1854; Blatter and Mc Cann. 224: 1935; Deshpande and Singh 107: 1986; Oommachan & Shrivastava Fl. Jabalpur 312. 1996.
Herb. Root fibrous. Stem long, densely tufted, leafy, nodes glabrous. Leaves narrow, strict, glabrous, flat or undulate. Flowers in panicle, long. Glumes three, lower involucral glume long, lanceolate, hyaline, upper involucral glume long, broader than the lower.
Fls. & Frts. : September – December
Distribution : Garha and Ranjhi area of Jabalpur.
Accession No. : SFRI-21189/16149

Zea mays L.
References: Sp. Pl. 971. 1753; Oommachan Fl. Bhopal 422. 1977. Oommachan & Shrivastava 328. 1996.
Annual tall, shout herbs., erect, annual monoecious plants. Adventitious root, primary, or secondary. Fleshy. Grooved. Straight. Internode 20–30 cm. Cylindrical. Solid. Leaves simple, alternate, hairy, or rough. Linear, entire, acute, or pointed. Amplexicaul, parallel. Inflorescence spikelets. Tassel born at the apex. Grains crowded, Shining. 1–2 mm. Smooth. Flattened, or Sub-globose.
Fls. & Frts. : August – October
Local name : Bhutta
Distribution : Cultivated throughput
Accession No. : SFRI-21183/16141

The present study reveals the occurrence of 26 taxa of grasses were collected, identified, classified and recorded in Jabalpur. These species found to be subjects of spontaneous spreading throughout of Jabalpur. Out of 26 species, belonging to 20 genera of family Poaceae have been enumerated, described and out of these 2 species have been updated first time for the flora of Jabalpur namely *Avena fatua* L. and *Chloris barbata* (L.) Sw.. An artificial key to the species have been constructed based on characters of the studied species. According to the resulting data, species of *Cynodon dactylon* (L.) Pers. and *Dactyloctenium aegyptium* (L.) Willd. & *Eragrostis cilianensis* (All.) are abundantly found in the study area. *Saccharum spontaneum* L. Mant. and *Echinochloa colonum* (Linn.) Link. Hort. are slightly found in this area.
It is sincerely hoped that the present investigation of grass resources from Jabalpur region can stand up valuable information for the further investigation of researchers who are facing with some difficulties to know about the species and anyone who are looking for the diversity of the members of the genus. This study will partially fulfill the requirement of grasses information of the region.

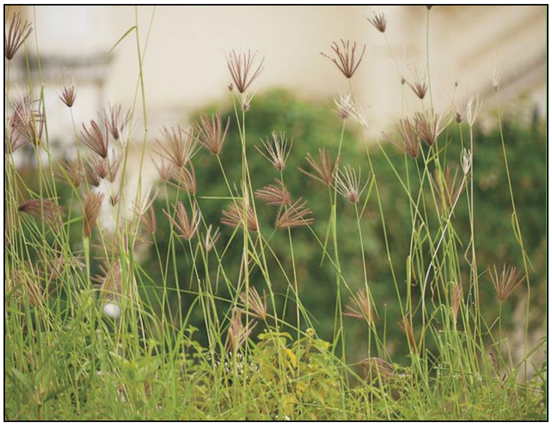

Fig 1: *Chloris barbata* (L.) Sw.

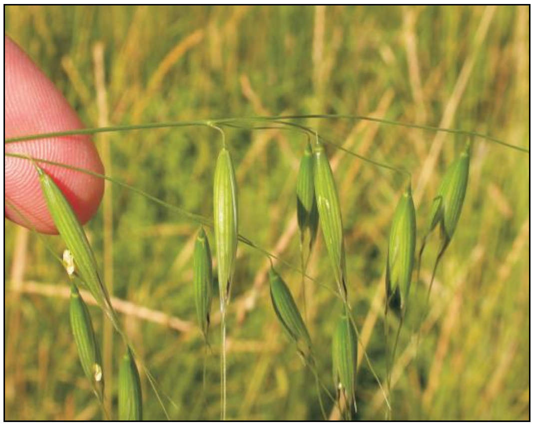

Fig 2: *Avena fatua* L.

Conclusion
Present study focused on taxonomically considerable is known to occur especially in the family Poaceae. This systematic study will be further enhancement of this knowledge and will also helpful to botanist and researchers in reconstructing the vegetation of plants. On the other hand it can also possible to use the given parameters to resolve taxonomic problems because taxonomists have been regularly using key characters of grasses to identify them.

Acknowledgement
I am thankful to the Director, State Forest Research Institute, Jabalpur for their supporting me to provide the Accession number for authentication of herbarium specimens.

References
1. Brummit RK, Powell CE. The Authors of Plant name, Royal Botanic Garden, Kew, 1992.
2. Clayton WD, Renvoize SA. Genera Graminum: Grasses

of the World. Kew Bulletin Additional Series 13, Royal Botanical Garden, Kew. Her Majesty's Stationery Office, London. 1986, 389.
3. Clifford HT. Spikelet and Floral Morphology. Grass Systematic and Evolution. Smithsonian Institution Press. Washington, DC. 1987, 473.
4. Dahlgren RMT, Clifford HT, Yeo PF. The Families of the Monocotyledons. Springer- Verlag. Berlin. 1985, 520.
5. Dutta AC. Botany for degree students. 6th ed. Oxford University Press. 1964, 603-630.
6. Hooker JD. The flora of British India. A sketch of the flora of British India. In the imperial Gazette, London. 1872-1897; 1(7):1904
7. Jain SK, Rao RR. A Handbook of Field and Herbarium Methods. Today and Tomorrow, Publishers, New Delhi. 1978.
8. Jain SK. The grass genera of India-Synoptic account of uses and phytogeography. Bull. Surv. India. 1986, 28:229-240.
9. Kirtikar KK, Basu BD. Indian Medicinal plants. International book Distributors, Fefradun, India. 1975, 4:2793.
10. Mudgal V, Khanna KK, Hajra PK. Flora of Madhya Pradesh, Botanical Survey of India, Kolkatta. 1997, 2.
11. Oommachan M, Srivastava JL. Flora of Jabalpur, Sci. Pub. Jodhpur; 1996; 1:354.
12. Oommachan M. Flora of Bhopal, JK. Jain Bros. Bhopal. 1977, 1-475.
13. Santapau Critical notes on the identify and nomenclature of some Indian plants. Bull. Bot. Surv. Indian. 1961, **3:**11-21.
14. Singh NP, Khanna KK, Mudgal V, Dixit RD. Flora of Madhya Pradesh, Bot. Surv. of India. Calcutta, 2001.
15. Verma DM, Balkrishna NP, Dixit RD. Flora of Madhya Pradesh. **1**. Bull. Bot. Surv. Indian. Calcutta, 1993.
16. Vidyarthii RD, Tripathii SC. A textbook of Botany. 3rd ed. Publisher, India, 2002, 686.
17. Watson L, Dallwitz MJ. The grass genera of the world. CAB international Wallingford Oxon. 1992.

International Journal of Botany Studies
ISSN: 2455-541X
Impact Factor: RJIF 5.12
www.botanyjournals.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 82-86

Wild and some threatened medicinal plants used by Tribals of Sidhi district (Madhya Pradesh), India

Suresh Prasad Saket
State Forest Research Institute, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

Abstract
The present paper on "*Wild medicinal plants used by tribals of Sidhi District Madhya Pradesh*". Sidhi region is very interior part and rich in plant biodiversity because of its variety of geology, land shapes like sandy, valley and hill areas. Sidhi is well known for its natural beauty, historical importance and rich cultural roots. This region located in a state between 24.2071° N latitude, 81.7787° E longitude. There are varieties of climate and altitudinal variations compiled with varied ecological habitants. A total 81 important wild medicinal plant listed which are useful for the several drastic human diseases. We can richness of species, genera and families at a place.

Keywords: threatened medicinal plants, Sidhi district, tribal people

Introduction

Sidhi District is one of the tribal districts of Madhya Pradesh state of India. The town of Sidhi is the district headquarters and the part of Rewa Division. It makes the North-Eastern boundary and this region located in a state between 24.2071° N latitude, 81.7787° E longitude. Sidhi is well known for its natural beauty, historical importance and rich cultural roots. The rich house of the wild medicinal plants with luxurious and variety of diversity. This region covered forest, reservoirs and hill areas. The Varchar Aashram is small place view very good at Rampur village**.** Total area of this region 10,536 km^2**.** Madhya Pradesh is variable niche of growing healing herbs, which are being used in Indian system of medicine like Ayurveda, Siddha and Unani. Madhya Pradesh has got 1, 35, 164 sq km of forest which accounts for 30, 48% of total geographical area of the state.

Ethnobotany is the study of the relationship between plants and people. The relationship between plants and human cultures is not limited to the use of plants for food, clothing and shelter but also includes their use for religious ceremonies, ornamental and health care [11].

Out of the total 4, 20,000 flowering plants reported from the world [2]. Tribal communities like Bhil, Gond, Baiga and Bediya inhabit it. All these tribal communities use plants for curing various disorders. Although ethnobotanically this region is under exploration, but still vast area remains untouched due to the displacement of the original population. A perusal of literature revealed that some work has been done on ethnomedicinal plants of Madhya Pradesh viz. [8, 9] and [1].

Materials and Methods

The Field work was undertaken in the tribal villages (Rampur, Dhokhad, Khokhra and Kushmi) and its surrounding areas of Sidhi District carried out by self. There were more than 50-75 informants between the ages of 45-75. This information was given to register ethnomedicinal knowledge possessed by tribal people especially the elders (above 45 of age). The main tribal groups in his region are Saket, Gond (Adivasi), Bhil, Baiga and Kaul who commonly communicate through Hindi and Bagheli. The recorded plant species were compared with the help of standard literature [5, 4, 23].

Identification

The collected fresh specimens were identified on the spot or in the laboratory with the help of flora of British India [3], Flora of Madhya Pradesh Vol. I, II, III [12, 13, 14, 15], Flora of Bhopal [6], flora of Jabalpur (Oommachan and Shrivastava, [7] and flora of Sidhi [17] and Upper Gangetic plains and of the Adjacent Siwalik and Sub Himalayan Tracts [16]. Herbarium technique will be mostly adopted from [21].

Result and Discussion

The present enumerated data was directly collected by traditional tribal healers of the Sidhi district. But important think is that this region is so anterior place of the district. So, no research work done in this area till date. While, highlight of this region is very rich medicinal source as plant wealth with variety of diversity. The author visited in this area and different local practinonars and collected the information about the plants. Total 81 plant species were listed which are used by local tribal people to treatment of several drastic human diseases. In the following text, plant species are arranged with their botanical names followed with the, local name, family habits, parts used and the mode of application.

Bark, leaves, fruits, roots, latex and seeds are the most frequently used plants for various ailments, and contribution of other parts is quits low. It was found that the Inflammatory, Asthma, Bronchial, Diarrhea, Dysentery, Scabies, Anti-cancer, Rheumatism, Astringent, Carminative, Purgative, Abdominal disorders, Constipation, Liver problems, Vermifuge, Stomachic, Snake bite, Diabetes, Leucorrhea, Epilepsy, Diuretic, Jaundice, Leprosy, Bone Fracture, Chicken pox, Muscular pain etc..

This side has a great potential and rich floristic diversity to

support variety of forest types with a remarkable biodiversity. The study side has been revealed with the presence of 81 species belonging to 50 Angiospermic families. The Angiospermic families were enlisted such as Acanthaceae , Zingiberaceae, Apiaceae, Crassulaceae, Scrophulariaceae, Lauraceae, Convolvulaceae, Bignoniaceae, Longaniaceae, Gentianaceae, Aspidiaceae, Fabaceae, Araceae, Liliaceae, Moraceae, Rubiaceae, Apocynaceae, Verbenaceae, Asteraceae, Baringtoniaceae, Verbenaceae, Menispermaceae, Asclepiadaceae, Anacardiaceae, Meliaceae, Sapindaceae, Boraginaceae, Euphorbiaceae, Combretaceae, Vitaceae, Solanaceae, Aristolochaceae, Smilacaceae, Dioscoreaceae, Cucurbitaceae, Tiliaceae, Asteraceae, Malvaceae, Mimosaceae, Mytraceae, Poaceae, Burseraceae, Ulmaceae, Sapotaceae, Sterculiaceae, Oleaceae, Cyperaceae, Adiantaceae, Asclepiadaceae and Cruciferae.

There are valuable data on the use of wild medicinal plants were recorded in different local areas of the state, number of publications such as [18, 19, 20, 22] and [23] were consulted.

This is constant with other general observations reported earlier. In relation to medicinal plant studies by Indian traditional systems of medicine like Sidha and Aurveda [10].

Different types of preparation mode from medicinally important plants included decoction, juice, powder, paste, oil and whole plant extract. Medicinal plants play an important role in providing knowledge to the researchers in the field of ethno-botany and ethno pharmacology. People use several methods to prepare medicines from local herbs and plant materials traditionally. Sometimes they use different parts of the plant and sometimes whole plants. Here the women of the study area were found to be more familiar with the use of such medicinal plants to cure reproductive health related disease (Table 1).

In the data revealed that some important critically endangered and endangered plants viz., *Curcuma augustifolia*, *Artocarpus lakoocha* , *Peucedanum nagpurense*, *Peucedanum dhana*, *Semipervium densiflorum*, *Litsea glutinosa*, *Argyreia speciosa*, *Oroxylum indicum*, *Hymenodictyon orixens* , *Strychynox nuxvomica*, *Swertia augustifolia*, *Acorus calamus*, *Dryoptaris sparsa*, *Chlorophytum borvilanum*, *Gardenia jasminoides*, *Gloriosa superb*, *Rauwolfia serpentine*, *Vernonia anthelmintica*, *Pterocarpus marsupium*, *Cissus quandrangularis*, *Smilax zeylanica*, *Cissus repanda*, *Dioscorea pentaphylla*, *Gmelina arborea*, *Cissampelos pareira*, *Lepidum sativum*, *Vetivera zizanioides*, *Fimbristylis juniformis* and *Citrullus colosynthesis.*

Table 1: Wild medicinally important Plant species enumeration of district sidhi (M.P.), India

S.N.	Botanical Name	Local Name	Family	Habit	Part Use	Ethno-Medicinal Uses
1	*Curcuma caesia*	Kali Haldi	Zingiberaceae	H	Rhizome	Commonly used to treat pimples and black heads & also used for the treatment of Inflammatory and leprosy.
2	*Peucedanum nagpurense* Prain.	Tejraj	Apiaceae	H	Leaf, roots	Sexual diseases
3	*Semipervium densiflorus* Wall.	Chitawar	Crassulaceae	C	Leaf	The leaves are useful the skin diseases.
4	*Vitex negundo*	Nirgundi Kand	Scrophulariaceae	H	Root, leaf	Root and leafs are used in skin diseases.
5	*Adhatoda zeylanica* Medik.	Adusa	Acanthaceae	S	Whole part	The decoctions of leaves are given to cure asthma and other bronchial troubles.
6	*Peucedanum dhana* Buch.	Bhograj	Apiaceae	H	Roots	The tuberous root is pasted and made small pills and given 2 tablets morning and evening for 21 days to enhance sexual power, vigor and vitality.
7	*Listea glutinosa* (Lour.) Robins.	Menda	Lauraceae	T	Root, leaf	Leaves decoction are used for the Diarrhea, dysentery, scabies.
8	*Argyreia speciosa* Sw.	Vidhara	Convolvulaceae	C	Leaf, root	The root and leaf used in Anticancer, Rheumatism.
9	*Oroxylum indicum* (L.) Vent.	SonaPatha	Bignoniaceae	T	Root, bark, fruits, seed	The root bark is used in stomatic problem. A seed paste is applied to treat boils and wounds.
10	*Strychnos nux-vomica* L.	Kochila	Longaniaceae	T	Bark, leaf, seed	Muscle relaxant
11	*Swertia augustifolia* L.	Chirayta	Gentianaceae	H	Leaf	This plants used as fever, abdominal disorders, nausea, indigestion, constipation and liver.
12	*Dryoptaris sparsa* O. Ktze.	Jatasankri	Aspidiaceae	H	Leaf	This plant used by local people in snakebite, swelling and ulcers.
13	*Mucuna pruriens* (L.)D.C.	Jungli Kewach	Fabaceae	C	Root, leaf, seed	To make herbal drug used in male infertility.
14	*Acorus calamus* L.	Bach	Araceae	H	Rhizome	The decoction of rhizome use as Stomachic, tonic & anti-flatulent.
15	*Centella rotundifolia* Roxb.	Brahmi	Apiaceae	H	Whole part	Leaf used as Skin diseases, brain tonic.
16	*Allium leptophyllum* L.	Van Lahsun	Liliaceae	H	Bulb, seed	The leaves and bulbs are applied to insect bites, cuts & wounds, while the seed are used to treat kidney & liver diseases.

S.N.	Botanical Name	Local Name	Family	Habit	Part Use	Ethno-Medicinal Uses
17	*Chlorophytum borvilanum* Roxb.	Safed Musli	Liliaceae	H	Root	Diabetes, leucorrhea, general weakness.
18	*Artocarpus lakoocha* Roxb.	Badhar	Moraceae	T	Bark, fruits	This plants used in digestive problem, liver problem and skin diseases.
19	*Gardenia jasminoides* Ellis	Gandhraj	Rubiaceae	T	Leaf	Leaves are used to treat skin diseases.
20	*Gloriosa superba* Linn.	Kalihari	Liliaceae	C	Root, rhizome	*Gloriosa superba* is used to rheumatism, inflammation, ulcer, skin diseases, leprosy, snake bite, purgative, infertility, abdominal pain, cancer and piles .
21	*Rauwolfia serpentine (*Linn.) Benth.	Sarpgandha	Apocynaceae	S	Root, seed	A decoction of the root (3 g) and black pepper is given to expel intestinal worms in children.
22	*Clerodendrum serratum* L.	Bharangi	Verbenaceae	S	Root, leaf	Herb used in treating asthma, fever and other inflammatory conditions.
23	*Andrographis paniculata* Ness.	Kalmegh	Acathaceae	H	Leaves and roots	Kalmegh has been used for liver complaints fever and weakness.
24	*Vernonia anthelmintica* L.	Somraj	Asteraceae	H	Seed	The plant used as roundworm and threadworm infestation, cough.
25	*Careya arborea* Roxb.	Kumbhi	Baringtoniaceae	T	Bark, leaf	Stem bark use in skin disease and epileptic fits.
26	*Gmelina arborea* Roxb.	Khamer	Verbenaceae	T	Root , stem bark, leaf	Root and stem bark used to treat Stomachic pain & Piles & leaf juice used in wash ulcer.
27	*Tinospora cardifolia* (L.) Merr.	Giloy	Menispermaceae	C	Stem, root leaf	Dry stem constitutes drug, which is used as tonic in diarrhea and chronic dysentery.
28	*Gymnema sylvestris* (Retz.)	Gudmar	Asclepiadaceae	C	Whole part	The leaves of the plant are used in diabetics.
29	*Amorphophallus campanulatus* (Roxb.)Bl.	Suran	Araceae	H	Corm, seed	Asthma and antiemetic.
30	*Pterocarpus marsupium* Roxb.	Beeja	Fabaceae	T	Leaf, stem, gum	Bruised leaves are applied on skin diseases, Sores and boils.
31	*Semecarpus anacardium* L.f.	Bhilma	Anacardiaceae	T	Seed, fruits	Diarrhea, dyspepsia, sciatica, paralysis, epilepsy, rheumatic and worms
32	*Hymenodictyon orixens* Mobb.	Bhudkud	Rubiaceae	T	Leaves stem.	Leaves are used to produce the milk in women.
33	*Soymeda febrifuga* A. Juss.	Rohina	Meliaceae	T	Bark	Bark used in the treatment of diarrhea, dysentery and fever and also as a general tonic.
34	*Sapindus laurifolius* Vahl.	Reetha	Sapindaceae	T	Fruits	The seeds are used to treat Joint pain.
35	*Cordia dichotoma* Forst.f.	Lasoda	Boraginaceae	T	Fruit, bark	The bark is used for the treatment of Jaundice.
36	*Colocasla sp.*	Lakshmad Kand	Araceae	H	Root	Tuber is used to treatment constipation, stomatitis, cancer, and weakness.
37	*Zingiber purgureum* Roscoe.	Van adrak	Zingigeraceae	H	Rhizome	Rhizome is used to treat indigestion and inflammation.
38	*Asparagus racemosus* Willd	Satawar	Liliaceae	S	Root	Juice of fresh roots given orally in dysentery.
39	*Euphorbia ligularia* Roxb.	Sehud	Euphorbiaceae	S	Latex	It is used to treatment of skin diseases.
40	*Terminalia chebula* Retz.	Harra	Combretaceae	T	Fruit, stem, bark	Harra is used for the treatment of anorexia , cough, hiccough, Jaundice, renal epilepsy, fever & leprosy.
41	*Cissus quandrangularis* L.	Hadjod	Vitaceae	C	Whole part	It is used to treat bone fracture.
42	*Withania somnifera* (L.) Dunal.	Ashwagandha	Solanaceae	S	Root, leaf	Ashwagandha is used for arthritis, anxiety, trouble sleeping tumors, tuberculosis and asthma.
43	*Aristolochia indica* L.	Ishwarmul	Aristolochaceae	C	Root, rhizome	The roots extract leprosy and antidote.
44	*Ficus racemosa* L.	Umar	Moraceae	T	Bark	The decoction prepared form the bark of the tree is used in the treatment of syphilis.
45	*Smilax zeylanica* L.	Ramdatun	Smilacaceae	C	Bark, Seed	The plant is used to treat insanity, colic, diarrhea, syphilis, gonorrhea, leucorrhea, arthritis, fever, skin disease and weakness.

S.N.	Botanical Name	Local Name	Family	Habit	Part Use	Ethno-Medicinal Uses
46	*Curcuma aromatica* Sallsb.	Van Haldi	Zingiberaceae	H	Rhizome	It is used to treat gastrointestinal & upper respiratory disorders, skin inflammation & infection.
47	*Dioscorea pentaphylla* L.	Suar kand	Dioscoreaceae	C		Tubers are used in Jaundice, dysentery, Madness, abdominal pain & bone fracture.
48	*Cissampelos pareira* L.	Padin	Menispermaceae	C	Root, bark, leaf	The root of the plants is used in snakebite. And also used to treat diarrhea & urinary.
49	*Cissus repanda* Vahl.	Parsutiha	Vitaceae	C	Root	The root powder used in bone fracture.
50	*Citrullus colosynthesis* (L.)	Indraman	Cucurbitaceae	C	Fruit, roots	This plant used to treatment of diabetic patient.
51	*Curcuma angustifolia* Dalzell.	Tikhur	Zingiberaceae	H	Leaf, roots	Skin diseases, cough, bronchitis, leucoderma, dysentery, diarrhea & colitis
52	*Grewia hirsuta* Vahl.	Gudsakri	Tiliaceae	H	Root	It is used for the Cardiac disorders, diarrhea & decoction.
53	*Eclipta prostrata* L.	Bhringraj	Asteraceae	T	Whole part	Bhringraj is an important Ayurveda herb, widely used in hair fall treatment, liver disorders, skin diseases etc.
54	*Feronia limonia* (L.) Swingle.	Kaitha	Rutaceae	T	Fruits	It is used to treat stomach diseases.
55	*Buchanania lanzan* Spreng.	Char	Anacardiaceae	T	Seed	It is used to treat urinary disorder
56	*Ocimum canum* Sims.	Mumri	Lamiaceae	H	Whole part	It is used to treat constipation & Jaundice.
57	*Dioplocyclos palmatus* L.	Sivlingi	Cucurbitaceae	C	Leaves, fruits	The leaves are used in inflammation and constipation.
58	*Abutilon indicum* (L.) Sw.	Kanghi	Malvaceae	S	Root, seed, bark, leaf	Hypothermic, CNS active, analgesic, aphrodisiac
59	*Acacia catechu (*L.f.) Willd.	Khair	Mimosea	T	Bark, leaf	Wood extract used in diarrhea, Swelling of the nose and throat.
60	*Syzygium cumini* (L.)	Jamun	Mytraceae	T	Bud, leaf	Seed powder is useful in diarrhea, dysentery &diabetes.
61	*Vetivera zizanioides* (L.) Nash.	Khas	Poaceae	H	Whole part	The oil of the plant used in skin diseases or ringworm.
62	*Phyllanthus emblica* L.	Amla	Euphorbiaceae	T	Root, bark, leaf, fruits	Fruits are used in digestion and as tonic. It is considered to be a good blood purifier.
63	*Boswellia serrata* Roxb.	Salai	Burseraceae	T	Leaf, Gum & Roots	Gum used as tonic. Root pasties allied externally in small pox & chicken pox.
64	*Datura metel* L.	Kamdut	Solanaceae	S	Whole part	Leaves are made into bidi and are smoked in asthma & bronchitis.
65	*Carissa carandas* L.	Karonda	Apocynaceae	S	Fruit, Leaf	It is used to treatment of stomach problem.
66	*Murraya koenigii* (L.) Spreng.	Meethi neem	Rutaceae	T	Bark, root, leaf	The leaves of the curry tree are used as anti diabetic.
67	*Solanum virginianum* L.	Bhakatiya	Solanaceae	H	Fruits	This herb is used in treatment of epilepsy, hair fall, bronchial asthma, skin problems.
68	*Holoptelea integrifolia* Roxb.	Chilbil	Ulmaceae	T	Leaf	Leafs are used in scabies. This plant also used in Rheumatism and leprosy.
69	*Dalbergia paniculata* Roxb.	Dhovin	Fabaceae	T	Root	Root extract used in snakebite.
70	*Ficus benghalensis* L.	Bargad	Moraceae	T	Bark,leaf, fruit,latex	The latex used in skin disease and astringent.
71	*Aegle marmelos* (L.) Correa.	Bel	Rutaceae	T	Root, stem, leaf, fruit	Fruits are used in dysentery & diarrhea. Bark decoction used orally in intermittent fever.
72	*Phyllanthus amarus* Schum.Thoun.	Bhui amla	Euphorbiaceae	H	Whole part	The plant used in pilea, jaundice, fever and anticancer.
73	*Madhuca longifolia* Macbr.	Mahua	Sapotaceae	T	Bark, fruit, seed	It is used to treatment of Rheumatism, fever & leucoderma.
74	*Helicteres isora* L.	Marodphalli	Sterculiaceae	T	Root, bark, fruits	Powder of ripe fruits & stem bark is employed in dysentery & diarrhea. Leaf juice is beneficial in stomach affections.
75	*Nyctanthes orbor-tristis* L.	Harsingar	Oleaceae	S	Leaf	The young fruits are pounded in water, and given in relieving cough.
76	*Fimbristylis juniformis* Kunth.	Hathipaw	Cyperaceae	H	Leaf	This plant used in antiviral and antibacterial infections.

S.N.	Botanical Name	Local Name	Family	Habit	Part Use	Ethno-Medicinal Uses
77	*Acacia nilotica* (L.) Willd.	Babul	Mimosaceae	T	Gum	The twig of the plant is used as natural tooth brush. The extract of fresh bark is used as tonic & gum is powerful tonic after delivery.
78	*Mitragyna parvifolia* (Roxb.)	Kaima	Rubiaceae	T	Fruits	Bark of the tree is used in fever and cold. Paste of the bark is applied in muscular pains.
79	*Adiantum philippense* L.	Hansraj	Adiantaceae	H	Leaf	Juice of leaves used to treat dysentery diseases , ulcers, burning sensations etc.
80	*Calotropis procera* Linn.	Madar	Asclepiadaceae	S	Whole part	The latex of plants is applied to remove thorn from the body. It is also used for the asthama & cough.
81	*Lepidum sativum* L.	Chandrasur	Brassicaceae	H	Leaf	Leafs are used in snake bite.

Legends: H = Herbs, S = Shrubs, T = Trees, C = Climbers

Conclusion

It is a fact that plants and human beings are closely related to each other. So, there is always a hunt for rich ethnomedicinal plant for ethno botanical studies of medicinal plants. Further, this research has placed on records the local uses of medicinally important plants which were interviewed among 50-75 local people of this region. The traditional healers are the main source of knowledge on medicinal plants and the outcome of result compare to another earlier literature. Finally, to conclude, this research article will attract the attention of ethno botanists, phytochemists and pharmacologists of this region for further critical investigation of medicinal plants. It is necessary to evolve effective conservation strategies of plants so that they can be conserved and used sustainable in the interest of humanity. In this point of view, botanical gardens have important role in conservation. Basic knowledge about the threatened, endemic, medicinal species is very much essential for their conservation.

Acknowledgements

The authors are thankful and grateful to the tribals people of this region specially vaidya Mr. Ramlal Saket and local people for the providing valuable informations.

References

1. Arjariya A, Chaurasia K. Ethno botanical remedies of some gastrointestinal problems from Chhatarpur District (M.P.) Muzaffernagar. J. of Nature Conservation. 2008; 20(1):47-52.
2. Govaerts R. How many species of seed plants are there Taxon, 2001; 50:1085-1090.
3. Hooker JD. The flora of British India. A sketch of the flora of British India. In the imperial Gazette, London, 1872-1897, 1(7):1904.
4. Jain SK, Rao R. A handbook of field and herbarium methods, Today and Tomorrow Pub., New Delhi, 1976; 1-182.
5. Kirtikar KR, Basu BD. Indian Medicinal plants. International book Distributors, Dehradun, India. 1975; 4:2793.
6. Oommachan M. Flora of Bhopal. J.K. Jain Bro. Pub., Bhopal. 1977; 475.
7. Oommachan M, Srivastava JL. Flora of Jabalpur", Sci. Pub. Jodhpur. 1996; 1:354.
8. Pandey AK, Bisaria AK. Rational utilization of important medicinal Plants: A tool for conservation. Indian Forester, 1997; 124(4):197-206.
9. Rai MK, Pandey AK, Acharya D, *et al.* Ethno-medicinal plants used by Gond tribe of Bhanadehi, district Chhindwara, Madhya Prades. J. Non-Timber Forest Products. 2000; 7 (3/4):237-240.
10. Kirtikar KR, Basu BD. Indian medicinal plants. International book distributers, Fefradun. 2001; 2793.
11. Schultes RE. Ethnobotany and technology in the Northwest Amazon: A partnership. In Sustainable harvest and marketing of rain forest products, Eds. Plotkin and Famolare, Island Press, CA. 1992; 45-76.
12. Verma DM, Balakrishan NP, Dixit RD. Flora of Madhya Pradesh. Bot. Surv. Of India, Calcutta, 1993; 1.
13. Mudgal V, Khanna KK, Hajra PK. Flora of Madhya Pradesh. Bot. Surv. Of India, Calcutta. 1997; 2.
14. Singh NP, Khanna KK, Mudgal V, Dixit RD. Flora of Madhya Pradesh. Bot. Surv. Of India, Calcutta. 1998; 3.
15. Khanna KK, Kumar A, Dixit RD, Singh NP. Supplement to the flora of Madhya Pradesh. Bot. Surv. of India, Calcutta, 2001.
16. J Duthie F. Upper Gangetic plains and of the Adjacent Siwalik and Sub Himalayan Tracts. Reprinted Edition, Bot. Surv. of India, Calcutta. 1903-29; 1-2.
17. Sengupta G, Ramlal. Flora of Sidhi District, M.P. Bull. Bot. Surv. of India. 1977; 1:182-188.
18. Dubey BK, Bahadur F. A study of the tribal people and tribal areas of Madhya Pradesh. Tribal Research and Development Institute, Bhopal, 1966.
19. Jain SK. Contribution to Indian Ethnobotany", Scientific Publishers, Jodhpur, 1991.
20. Kirtikar KR, Basu BD. Indian Medicinal plants. 1 to 8, Reprinted in 1994 by Bishen Singh Mahendra Pal Singh Publ., Dehradun, India, 1935
21. Santapau H, Jain SK. Critical notes on the Identify and Nomenclature of some Indian Plants. Bot. Sur. of India, 1961; 3:11- 21.
22. Saini VK, Charmkar SP. Herbal Plants Used To Cure Various Ailments by the Inhabitants of Jabalpur, Madhya Pradesh. South Asia Journal of Multidisciplinary Studies. 2016; 2(3):59-67.
23. Saini VK, Saket SP. Ethno medicinal value of some plants in central India with special emphasis to Jabalpur region. Life Science bulletin. 2014; 10(2):282-284.
24. Saket SP, Saini VK. A Comprehensive floristic study of Jabalpur district with special emphasis to dominant family. International Journal of Science and Research, 2016, 5(11):90-92.